THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): That is enough. That is all. Shrimati Sushma Swaraj. *(Interruptions).*

SHRI S.S. AHLUWALIA: No. At the time of starting the Railway Budget in Lok Sabha, he was present there. *(Interruptions).* It is an insult to the House. *(Interruptions).* How can you allow that?

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): You have made your say. He has given the reply and I have given my ruling. What else do you want?

SHRI S.S. AHLUWALIA: I am not satisfied.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): Let him speak.

THE BUDGET (RAILWAYS) 2008-09
GENERAL DISCUSSION

उपसभाध्यक्ष जी, रेल मंत्री ने रेल के कायाकल्प को इस भाषण में जादुई कायाकल्प कहा है। अगर आप इनके बजट भाषण का पैरा 62 ओर 63 देखें तो उन्होंने कहा कि मैंने रेलवे का जादुई कायाकल्प किया है और उनकी स्पीच का जो दूसरा भाग है, उसमें तो उन्होंने एक दोहा ही पढ दिया है। उन्होंने कहा है-" जादू- टोना हमने दिखाया था पिछले साल, इस बार इंद्रजाल देख लीजिए।" जादू की यह खासियत होती है कि उसने जो दिखता है, वह वास्तव में घटता नहीं है। मुझे बचपन की एक घटना याद आई। हमारे शहर अंबाला में एक जादूगर खेल दिखाने आया था। उसने डुगडुगी पिटवाई कि मैं मैदान में खेल दिखाने आऊंगा । सारे मोहल्ले के बच्चे खेल देखने जा रहे थे, मैं भी अपने भाईके साथ चली गई। उसने कई तरह के खेल दिखाए। उसके बाद उसने एक चादर बिछा दी और जोर से बोला – जय काली कलकत्ते वाली, तेरा वचन न जाए खाली , छू मंतर और पूरी चादर पर नोट ही नोट बिखर गए । एक-दो और खेल

दिखाकर जादू खत्म हो गया और जब जादू खात्म हूआ तो वह अपना कटोरा लेकर सबके सामने पैसा लेने के लिए चला । मां ने चलते समय हम दोनों बहन-भाईयों को चवन्नी-चवन्नी दी थी। उस समय चवन्नी की बहुत कीमत होती थी । हमने वह चवन्नी उसे दे दी। जब मै वापस आ रही थी तो मेरे मन में एक प्रश्न बार –बार उठ रहा था। एक सवाल मुझे बार –बार टटोल रहा था। मैंने अपने भाई से पूछा, भैया, यह जादूगर इतने नोट बना सकता है, इतना अमीर है तो फ़िर यह हमसे छोटे – छोटे पैसे क्यों मांगता है? उस समय भाई ने मुझे एक बात कही थी कि पगली, जादू में जो होती है, वह दिखता नहीं है। जादू सच नहीं दिखाता, यह तो जादूगर की हाथ की सफ़ाई है। वह निगाह बांध देता है, इसलिए वह जो दिखाता है, केवल वही दिखता है, सच नहीं दिखता है। मझे लगा कि शायद लालू जी ने सच बोला है कि यह जादूई कायाकल्प है, क्योंकि वास्तव में बजट भाषण में जो दिख रहा है, वह हुआ नही है, वह घटा नही है। लेकिन जादू – टोना करके एक जादूगर का कमाल लालू जी ने जरूर दिखाया है। उपसभाध्यक्ष जी, उन्होंने अपने भाषण की शुरूआत एनडीए को कोसने से की है। हमारे कार्यकाल की कस कर आलोचना की है। अपने भाषण के तीसरे नम्बर के पैरा में ही जहां से असली भाषण शुरू होता है, उनहोंने कहा, " महोदय, यपीए सरकार बनने से पूर्व रेलवे की वित्तीय स्थिति क्या थी, किसी से छिपा नहीं है। रेलवे एल ऐसे गम्भीर वित्तीय संकट से जूझ रही थी कि वह भारत सरकार को डिविडेंड देने से भी चूक रही थी और गतायु सम्पत्तियों को समय को समय रहते बदलने की स्थिति में नहीं थी । आज जब इसका वित्तिय कायकल्प हो गया है, तो वही लोग इसका श्रेय लेने के लिए बड़े-बड़े दावे कर रहे हैं।" इसके बाद उन्होंने एक शेर पड़ा । " उजड़ा चमन जो छोड़ गए थे हमारे दोस्त, अब बात कर रहैं वे फ़सले बहार की "। उपभाध्यक्ष जी, यह आरोप सत्य से परे है। उन्होंने हम पर पहला आरोप लगाया है कि एनडीए के समय में डिविडेंड नही दिया गया था। मैं वे ऑकड़े आपके सामने सदन में रखना चाहुगी। ...(**व्यवधान**)... लालू भाई आ गए । लालू भाई, मैंने तो आपको बधाई दी थी, लेकिन आप थे ही नहीं तो मैं क्या करू अब आप बधाई वाला पाठ बाद में पढ लीजिए, मै सब चीजें दोबारा तो कहूगी नहीं।...(**व्यवधान**)...

रेल मंत्री (**श्री लालू प्रसाद**): महोदय, Sorry, मै टाइम पर नहीं आया। हमारे मंत्री यहां थे। आपका क्वार्टर नजदीक है। आपसे हमारी बात हुई, आप भी लंच करने गईं और मैं भी गरम-गरम बनवा ही रहा था। **मैं** आपके नाम पर खाना छोड कर चला आया।

श्रीमती सषमा स्वराजः बहनें खाना खिलाती हैं, छुड़वाती नही हैं। अगर मैं खाकर चली आई, तो आप भी खाकर आ जाते ।

श्री एस. एस. अहलुवालिया (झारखंड) **:** आपके मंत्री ने कहा कि आप लोक सभा में बैठे हैं । फिर गुमराह कर दिया । उन्होंने रिकार्ड पर कह दिया कि आप लोक सभा में बैठे हैं ।

श्रीमती सुषमा स्वराज : चीफ व्हिप ने भी कहा कि लोक सभा में बैठे हैं । और वेलू जी ने भी कहा कि लोक सभा में बैठे है ।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): Laluji, she was sorry that you did not hear her when she complimented you. That is the point.

श्रीमती सुषमा स्वराज : अब मेरे गले में टेप थोड़े ही लगा है कि वैसे का वैसा दोबारा चला दूंगी । आप इतना पढ़ लीजिए, लेकिन अब मैं आपको उस आरोप से शुरू कर रही हूं, जो आपने एनडीए के कार्यकाल के बारे में लगाया और आपने एक शेर पढा । "उजडा चमन जो छोड़ गए थे हमारे दोस्त, अब बात कर रहे हैं वे फसले बहार की" आपने कहा कि हमने डिविडेंड नहीं दिया । आपने कहा कि हमने गतायु सम्पत्तियों को समय रहते नहीं बदला । यह आपका आरोप है न लालू भाई यह आपका आरोप है । मैं आपके सामने वह डिविडेंड का आंकडा रखना चाहती हूं, जो आपके आने से तीन वर्ष पहले तक 2001 में 2002 में और 2003 में रेलवे के द्वारा दिया गया था । किस अधिकारी ने आपको यह कहा कि हमने डिविडेंड नहीं दिया था । मैं आपके सामने वह आंकडा रखती हूं । महोदय, सन् 2001-02 में 1337करोड 18 लाख रूपए, 2002-03 में 2714 करोड 85 लाख रूपए और 2003-04 में 3387 करोड 8 लाख रूपए उसके बाद जब आप आए, तो आपने 3199 करोड 31 लाख रूपए का डिविडेंड दिया । लेकिन आपसे पहले तीनों साल का डिविडेंड नीतीश कुमार के शासन काल में, एनडीए के शासन काल में रेलवे ने दिया । उपसभाध्यक्ष जी, मैं यहां आपको यह भी बता दूं कि वित्त मंत्रालय ने सलाह दी थी कि रेलवे डिविडेंड defer कर दें, लेकिन उस सलाह को न मानते हुए भी पूरा डिविडेंड दिया । अगर आप उससे पहले की बात कर रहे हैं, तो लालू भाई, मैं आपके सामने कहना

चाहती हूं कि वह उस अर्थव्यवस्था का परिणाम था,जो हमें विरासत में मिली थी, लेकनि हम जो अर्थव्यवस्था आपको विरासत में देकर गए हैं, उसमें ती साल तक लगातार रेलवे डिविडेंड देता रहा था और उसके बाद आप रेलवे का डिविडेंड दे रहे हैं । यह आरोप सत्य से भी परे हैं और तथ्य से भी परे हैं ।

आपने दूसरा आरोप लगाया कि रेलवे गतायु सम्पत्तियों को समय रहते बदलने की स्थिति मे नहीं था । आप इससे ज्यादा भ्रामक प्रचार नहीं कर सकते । मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि क्या यह सच नहीं है कि सन् 2001 में अक्टूबर महीने में जब नीतीश कुमार रेल मंत्री थे, तो उन्होंने अपने शासल काल में, 17,000 करोड़ रूपए से एक विशेष रेल संरक्षा निधि का सृजन किया था, SRSF & Special Rail Safety Fund बनाया था और क्या यह सच नहीं हैं कि केवल फंड का सृजन नहीं हुआ था, उन्होंने रेल पथ का नवीकरण करने का काम, उन्होंने पुलों को नया बनाने का, बदलने का काम अपने समय में केवल प्रारम्भ नहीं किया था, बल्कि आधे से ज्यादा पूरा कर दिया था ? लालू भाई, मैं अपनी ओर से नहीं कर रही मैं आपका बजट भाषण यहां पढ कर सुनाना चाहती हूं । याद करिए 6 जुलाई 2004 को आपने पहला बजट भाषण दिया था । लालू भाई, जरा आप ध्यान दीजिए । 6 जुलाई, 2004 को आपने सदन में रेल मंत्री के नाते पहला बजट भाषण दिया था । मैं उसका पैरा 10 और पैरा 11 आपको पढ कर सुनाना चाहती हूं । महोदय,आप ध्यान देंगे । यह लालू भाई का भाषण है, यह मैं नहीं कर रही हूं ।

"रेलपथ, पुलो, चल स्टॉक और सिगनल गियरों की गतायु परिसंपत्तियों के नवीकरण के बकाया कार्यो के साथ-साथ संरक्षा संवर्धन संबंधी कार्यो को पूरा करने हेतु 6 वर्ष तक की अवधि के लिए 01.10.2001 से 17 हजार करोड रूपये की विशेष रेल संरक्षा निधि का सृजन किया गया था । इस निधि के अंतर्गत स्वीकृत विभिन्न कार्यो को पूरा करने के संबंध में काफी प्रगति हुई है ।"

यह बात यह कह रहे हैं, मैं नीं कर रही हूं ।

"31.03.2007 तक पूरा किए जाने वाले 16,538 किलोमीटर के कुल निर्धारित लक्ष्य में से 31.3.2007 तक 8,938 किलोमीटर रेलपथ का नवीकरण कर लिया गया है ।"

यह आप कह रहे हैं ।

"1,053 अन्य स्टेशनों पर कार्य प्रगति पर है । 2003-04 के दौरान 387 लेवल क्रासिगों पर सिगनलों के साथ इंटरलॉकिंग का कार्य पूरा कर दिया गया है । इस प्रकार 16,549 चौकीदार वाली लेवल क्रासिगों में से 7,095 पर इंटरलॉकिंग का कार्य पूरा कर लिया गया है । 90 चुनिंदा लेवल क्रासिंगों पर दुर्घटनांए कम करने की दृष्टि से नजदीक आने वाली गाडी की चेतावनी देने के लिए ट्रेन एक्च्युएटेड वार्निग डिवाइस (टी.ए.डब्ल्यू.डी.) की व्यवस्था की गई है । यह उपकरण सडक उपयोगकर्ताओं और चौकीदारों को आने वाली गाडी की चेतावनी एक फ्लैशिंग लाइट और सायरन के द्वरा देगा । विशेष रेल संरक्षा निधि के अंतर्गत लगभग 5,300 स्थलों पर ट्रैंक सर्किटिंग संबंधी कार्य प्रगति पर हैं लगभग 1,700 स्थलों पर कार्य अब तक पूरा कर लिया गया है ।" आगे आप कहते हैं, 2700 पुलों में से 1306 पुलों का कार्य 31.03.2004 तक पूरा कर लिया गया है ।"

मैं आपसे केवल एक बात पूछना चाहती हूं अक्तूबर 2001 को रेल मंत्री कौन था ? मैं आपसे यह पूछना चाहती हूं कि सरकार किसी थी ? 31.03.2004 को रेल मंत्री कौन था ? सरकार किसी थी ? लालू भाई, आप तो मई, 2004 में आए और जुलाई 2004 की 6 तारीख को आपने यह भाषण दिया । आपको कार्यकाल केवल डेढ माह का ही पूरा हुआ था, तो आप सच बोलने से नहीं झिझके । यह आपने ही सदन में कहा है । लेकिन आज जब आपको चार साल होने को आए तो आपके अधिकारियों ने आपको धोखा दे दिया । उन्होंने सारी पुरानी बातें भुलवा दी । शायद उन्होंने सोचा होगा कि चार साल पुरानी बात सदन में किसको याद रहेगी, लेकिन वे भूल गए कि आपकी एक अपनी बहन भी इस सदन के अंदर

हैं, जो आपकी हर बात की जानकारी रखती है। जो आपकी सारी कारगुजारी जानती है। आपसे पूछना चाहती हूं कि प्रिडिसैसर- स्कसैसर सिंडॉम तो होता है, पूर्ववर्तीमंत्री और वर्तमान मंत्री में तनातनी का रिश्ता भी होता है, लेकिन किए हुए काम की इस तरह से अनदेखी करना क्रतघ्नता होता है , लालू भाई।

मेरी दिक्कत यह है कि नीतिश भी मेरे उतने ही स्नेही भाई हैं जितने कि आप। एक भाई जब दूसरे भाई कि निन्दा करता है, तो बहन को बुरा लगता है और वह भी अगर बेवजह करे तो गुस्सा आता है। शायद मैं इस रेल बजट पर बोलती 4-00 P.M.
भी नहीं, अगर आपने इस तरह से उनकी निन्दा न की होती। सक्सैर्स तो और भी आए हैं, अन्य मंत्रालयों के भी आए हैं। मेरे भी सक्सैर्स आए हैं, स्वास्थ्य मंत्रालय में मेरे उत्तराधिकारी मंत्री आए हैं ,श्री आन्बूमणि रामदास। मेरा उनसे कोई बहुत मित्रता का रिश्ता नहीं है। शायद चार बरस में केवल दो बार ही बात हुई होगी, लेकिन पिछले ही सत्र में यहां स्वास्थ्य मंत्रालय के वर्किंग और कार्यकलाप पर चर्चा हो रही थी।

मैं स्वयं जान बूझ कर चर्चा में भाग नहीं ले रही थी। लेकिन अन्य लोगों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए डा0 रामदास ने मेरे सभी initiatives को इस सदन में खडे होकर acknowledge किया था मैं भी उनकी predecessor हूं। वे भी मेरे successor हैं। मैं आपको केवल दिखाने के लिए यह लाई हूं मैं यहां नही बैठी थी कि वे मुंह-देखा टीका निकाल रहे हों, जिस समय वह यह बात कह रहे थे। मुझे तो वृंदा जी ने बताई, तो मैंने मंगाकर पढी कि उन्होंने क्या कहा । यह रामदास जी की स्पीच है। वह इसी सदन में खडे होकर, पिछले सत्र में हैल्थ मिनिस्ट्री की वर्किंग का रिप्लाई देते हुए कह रहे हैं – "Sir, I have a good predecessor. Shrimati Shushma Swaraj was one of the best Health Ministers. She was my predecessor. She had initiated a lot of programmes,which I am continuing today , In fact,the Prime Minister's Swasthya Suraksha Yoina was her brain-child."यह उन्होंने कहा । उसके बाद उन्होंने कहा –"Shushmaji had done a wonderful job in propagating the Indian system and we are trying to propagate it, not only in our country but all over the world."और जब मुझे यह पता चला, तो उसके बाद मैं स्पेशल समय लेकर—सर, उस समय आप ही चेयर पर थे । आपको याद होगा कि मैंने आपसे पांच मिनट का समय मांगा था, और उस समय का उपयोग करते हुए मैंने सदन में खड़े होकर कहा था –" मैंने इस चर्चा में जान-बूझ कर भाग नहीं लिया था, क्योंकि मुझे लगता था कि
की बात कह कर शायद मेरी बात की ojectivity पर question mark लगा जाएगा । लेकिन मैं मंत्री महोदय की आभारी हूं, जिस उदारता और जिस सदाशसता से उन्होंने मेरी इनिशिएटिव्स को एक्नॉलेज किया है, सदन में उन बातों को रखा है । मैं उन्हें कहना चाहती हूं कि बहुत कम लोगों में यह जेनेरॅसिटी होती है । लोग आम तौर पर prodecssor की खमियों को निकालते हैं, लेकिन सारा क्रेडिट स्वयं लेते हैं, लेकिन आपने इतनी बार उन बातों का जिक्र किया है, मैं मन से आपकी आभारी हूं । आपकी इस जेनेरॅसिटी के लिए आपका बहुत धन्यवाद करती हूं ।

लालू भाई, इस तरह की परम्परा से लोकतंत्र मजबूत होता है । यही संसदीय गरिमा है कि हम अपने पूर्ववर्ती मंत्री की अच्छी की हुई बातों को स्वीकरें और स्वयं उससे भी ज्यादा बेहतर करें ताकि उसके बाद लोग हमारी सराहना करें । लेकिन आपने तो नीतिश जी को चिढाने की कोशिश की है । मैं बिहार की आपकी राजनीति की मजबूरी समझ सकती हूं कि नीतीश कुमार की बडाई आप नहीं कर सकते । आपकी जुबान रूकती है । मगर लालू भाई, आप चुप तो रह सकते थे । आप मौन तो रह सकते थे । आपने तो एक दोहा पढ दिया :

उजड़ा चमन जो छोड़ गए थे हमारे दोस्त ।
अब बात कर रहे हैं वह फसल-ए-बहार की ।।

लालू भाई, यहां दोहा तो यह आना चाहिए कि :
जब पड़ा वक्त, गुलिस्तां पे खून हमने दिया ।
अब आई बहार तो कहते हैं तेरा काम नहीं ।।

मैं आपको याद दिलाना चाहती हूं कि जिस समय रेलवे जर्जर अवस्था में थी, आखिरी सांसे गिन रही थी, रेलवे की परिसम्पत्तियों आउटडेटेड हो गई थी, उस समय उस दूरदर्शी नीतीश कुमार ने यह निर्णय किया था , महत्वाकांक्षी फैसला किया था कि जब तक इन पटरियों का नीवकरण नहीं होगा, जब तक इन पुलों को नया नहीं किया जाएगा, रेल न यात्री ढो सकेगी, न माल ढो सकेगी और 17 हजार करोड रूपए को "रेलवे स्पेशल फंड" बनाकर उसने सुपर सोनिक स्पीड पर काम शुरू किया था । यही कारण था कि 16,538 किलोमीटर में से 8,938 रेल पथ नये करके आपको देकर वह गया है । 2700 पुलों में से 1306 पुल नए करके आपको देकर वह गया । आज जो आपकी गाडियां अतिरिक्त लदान से भर कर आपको इतना-इतना मुनाफा कमवा रही हैं, अगर यह रेल पथ का नवीकरण नहीं हुआ होता, अगर यह पुलों का नवीकरण नहीं हुआ होता, अगर इस " विशेष रेल सरंक्षा निधि" का सृजन नहीं हुआ होता, अगर उन गतायु सम्पतियों को समय रहते न बदला गया होता, तो एक मन अतिरिक्त लदान भी लेने की हालत में आपके रेलवे में नहीं थी, वह उलटती-पलटती चलती । इसलिए मैं आपसे कहना चाहती हूं कि कृतघ्नता मत दिखाइए । जो काम वह करके गए हैं, कम से कम उसका श्रेय उन्हें लेने दीजिए । आज जो काम आप कर रहे हैं, यह उसी पौधे का फल खा रहे हैं, जो पौध वह अपने खून-पसीने से लगाकर गया था, सींच कर गया था । उस 17 हजार करोड़ में आपने एक रूपया भी जोड़ा नहीं है । आपके हर भाषण में उसी रेल संरक्षा निधि का जिक्र आता है.... । और वहीं 16538 कि0मी0 रेल पथ आप 2007तक नया कर रहे हैं उसमें एक किलोमीटर भी आपने जोड़ा नहीं है ।

लालू भाई, इसके बाद मैं आपके अपने दावों पर आती हूं । आपको पहला दावा है , आपने यात्री भाड़ा नहीं बढाया बल्कि यात्री भाडे में कमी करके मुनाफा कमाया है । लालू जी, मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि भाड़े की परिभाषा क्या होती है ? मेरी राय में तो शायद भाडा, उस राशि को कहते हैं जो यात्री अपनी यात्रा के एवज में रेलवे को देता है । आप कहते हैं आपने यात्री भाड़ा नहीं बढाया, आपने "तत्काल" का एक ऐसा इंद्रजाल बिछाया है कि उस इंद्रजाल की चकाचौध में कुछ पता ही नहीं चल रहा है । मैंने पिछली बार भी यह बात आपके सामने रखी थी । उपसभाध्यक्ष महोदय, रेलवे में एक तत्काल नाम को कोटा होता था । हमारे समय में भी होता था क्योंकि कुछ लोगों को अचानक सफर करना पड़ता है – कोई घर में बीमारी आ गई, कोई शादी-ब्याह आ गया, अचानक किसी की मृत्यु हो गई, तो तत्काल सफर करना पड़ता है । हमारे समय में यह कोटा 10 परसेंट था, हमारे समय में यह कोटा 24 घंटे पहले शुरू होता था क्योंकि तत्काल का अर्थ ही यह है । तत्काल शब्द की परिभाषा से हमारी नीति मेल खाती थी, 10 परसेंट टिकटें 24 घंटे पहले मिलेंगी । अगर किसी को अचानक आवश्यकता पढ जाए तो 50 रूपया द्वितीय श्रेणी के लिए और 100 रूपया उच्च श्रेणी के लिए देकर आप वह टिकट खरीद सकते थे । लालू जी ने क्या किया है ? वह कोटा 10 परसेंट से बढाकर 30 परसेंट कर दिया, एक दिन के बजाय उसको पांच दिन कर दिया । अब ज्यादातार ट्रेंस में 70 परसेंट टिकटें साधारण बिकती हैं और 70 परसेंट टिकटें देने के बाद काउंटर बंद हो जाता है, बाकी 30 परसेंट टिकटें आपको तत्काल में ही लेनी पडती हैं । आप कहेंगे क्या फर्क पडता है तत्काल में लेने में ? जो फर्क पड़ता है , वह मैं बताती हूं। पहले जो चार्ज 50 रूपया और 100 रूपया अतिरिक्त हमने रखा था, वह बढाकर अब 100 रूपया और 300 रूपया कर दिया गया है, यानी द्वितीय श्रेणी की टिकट पर 100 रूपया ज्यादा देना पडेगा व उच्च श्रेणी की टिकट पर 300 रूपया ज्यादा देना पडेगा । यह पहला फर्क है । दूसरा फर्क, तत्काल में जहां से आपको चलना है और जहां जाना है, वहां तक की टिकट नहीं मिलती , जहां से गाडी चलती है और जहां गाडी पहुंचती है , वहां तक की टिकट लेनी जरूरी होती है । जैसे अगर आपको दिल्ली से चढना है और भोपाल तक जाना है तो तत्काल कोटा में टिकट दिल्ली से भोपाल की नहीं मिलेगी । अगर ट्रेन अमृतसर से दादर तक जा रही है तो आपको मजूबरन टिकट अमृतसर से दादर तक की लेनी पडेगी । यह दूसरा फर्क है । तीसरा फर्क, अगर आप तत्काल का रिफंड लेने जाएं तो वह केवल 24 घंटे से पहले मिलेगा और कुछ किराए का केवल 25 फीसदी रिफंड मिलेगा और अतिरिक्त आपने 100 रूपया व 300 रूपया दिया है, उसका रिफंड नहीं मिलेगा । मैं पूछना चाहती हूं 5 दिन पहले तत्काल कोटा का शुरू होना, 30परसेंट टिकटों का लाजिमी तौर पर तत्काल कोटा के रूप में जाना, जहां से गाडी चलती है वहां से लेकर और जहां गाडी पहुंचती है वहां तक की टिकट का मजबूरन लेना, इस मजबुरी में आपने भारत के यात्रियों को डाला है, और आप कहते हैं कि आपने यात्री भाड़ा नहीं बढाया है । मुझे तो यह भी जानकारी मिली है कि कुछ गाडियों में तत्काल की बुकिंग 60 दिन पहले होती है । कहीं तत्काल की परिभाषा आपने 60 दिन पहले सुनी है, लेकिन उन्होंने तत्काल की बुकिंग भी 60 दिन पहले करने का काम किया है ।

इसी तरह से concellation charges भी 10 रूपया और 20 रूपया बढा दिए है । एक और खेल इंद्रजाल में आपने खेला है, वह है सुपर फास्ट ट्रेंस का । 80 परसेंट से ज्यादा गाडियो नाम बदल कर सुपर फास्ट रख दिया और टिकट में उसका भाड़ा 20/- रूपए 25/- बढा दिया । वे गाडियां न सुपर बनी है, न फास्ट, केवल उनका नाम बदला है और वहां 20/- रूपए, 25/- रूपए बढ़ाने का काम हुआ है ।

रिटर्न जर्नी और ओनवर्ड जर्नी, उपसभाध्यक्ष जी, अगर आप एअर टिकट लेने जाएं और वापसी का टिकट साथ लें, तो सस्ता मिलता है क्योंकि आप दो टिकट ले रहे हैं, मगर इन्होंने कहा है कि अगर रिटर्न जर्नी का टिकट आप साथ बनावाओंगे तो 20/- रूपया, 25/- रूपया, फालतू देना होगा । मैं कहना चाहती हूं कि एक तरफ तो आप यह कर वाहवाही लूटते हैं कि आपने यात्री भाडा नहीं बढाया और दूसरी तरफ आप जहां से भी पैसा वसूल सकते हैं उस तरह से वसूल कर यात्रियों की कमर तोड रहे हैं । लालू भाई, आप गुम चोट मारने में माहिर हैं । आप गुम चोट मार रहे हैं और आप जानते हैं कि गुम चोट दिखती नहीं है, लेकिन साधारण चोट से ज्यादा दर्द करती है, इसलिए आप यह काम मत करिए । जिस तरह आप यात्री भाड़े में कर रहे हैं, उसी तरह आप माल भाड़े में भी काम कर रहे हैं । आप कहते हैं कि आपने माल भाड़ा नहीं बढाया, लेकिन मैं पूरी जिम्मेदारी से यहां खडे होकर कहना चाहती हूं कि लालू जी ने सभी संसद में आकर माल भाड़ा नहीं बढाया, लेकिन संसद को विश्वास में लिए बिना अपने मंत्रालय से अधिसूचना जारी करके बीसियों बार माल भाड़ा बढाया है । मैं यह पूरी जिम्मेदारी से कहती हूं कि आपके शासन-काल में माल भाड़े में हर वर्ष 7 प्रतिशत की औसत वृद्वि हुई है और यह केवल औसत वृद्वि की बात नहीं, बल्कि खाद्यान्न और खाद के भाड़े में तो 20 और 25 प्रतिशत वृद्धि हुई है । खाद और यूरिया में 20 परसेंट की आपने वृद्धि की है, वर्ष 2006-07 में खाद का माल भाड़ा 70 पैसे प्रति टन किलोमीटर था, इसे आपने 2007-08 में बढाकर कितना कर दिया ? 77 पैसे प्रति टन । वर्ष 2006-07 में खाद्यान्न का माल भाडा 60 प्रैसे प्रति टन किलोमीटर था, उसे आपने कितना कर दिया ? 73 पैसे प्रति टन, यानी 25 परसेंट की वृद्धि और आप कहते हैं कि आपने माल भाड़ा नहीं बढायां । मैं यह आंकड़े यहां खड़े होकर जिम्मेदारी से सदन में रख रही हूं ।

उपसभाध्यक्ष जी, आप जानते हैं कि आज रेलवे का नेशनल फ्रेट में क्या शेयर हैं ? कुल 35 फीसदी । आजादी के समय नेशनल फ्रेट शेयर में रेलवे का हिस्सा 89 परसेंट था । वर्ष 1960 के आसपास एक पांडे कमेटी बनी थी । उसने कहा था कि नेशनल फ्रेट में कम से कम 70 से 75 परसेंट शेयर रेलवे का होना चाहिए । अगर उतना संभव नहीं, तो आप देखें, यूरोपियन युनियन ने यह कहा है कि विश्व के हर देश में कम से कम 50 फीसदी शेयर रेलवे का होना चाहिए । लेकिन, आप जानते हैं कि आज आपका कितना शेयर है ? माल में 35 फीसदी, यात्री परिवहन में 20 फीसदी । एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट में भी आपका नेशनल शेयर घटा है और आप बात करते हैं कि माल भाड़े में वृद्धि नहीं की । आपने माल भाडा भी बढाया है । यह ठीक है कि यात्रियों की संखया बढ़ी है लेकिन मैं हिस्सेदारी की बात कर रही हूं, रेलवे की हिस्सेदारी नेशनल फ्रेट शेयर में घटी है और वह 35 परसेंट पर आकर खडी है ।

उपसभाध्यक्ष जी फिर आप विकास की बता करते है । अर्थशास्त्र का यह स्थापित सिद्धांत है, लालू भाई, कि जिस दर से राष्ट्रीय अथ व्यवस्था बढती है, उससे कम से कम दो परसेंट ऊपर परिवहन सेक्टर, ट्रासंपोर्ट सेक्टर की अर्थ-व्यवस्था बढती है । आज वित्त मंत्री दावा क रते है कि भारत की अर्थ-व्यवस्था 9 परसेंट के आधार पर बढ़ रही है, उसअनुपात में कम से कम रेलवे की ग्रोथ 10 परसेंट होनी चाहिए थी , लेकिन आपके अपने मुताबिक रेलवे की प्रस्तावित वृद्धि दर केवल 8 फीसदी है । यह आपके विकास दर का दावा है । आप दावा करते हैं, आपने 25 हजार करोड़ का कैश सरप्लस अर्जित किया है । किया है न दावा आपने , मैं पूछना चाहती हूं? अगर 25,000 करोड़ रूपए का यह कैश सरप्लस सही है तो आप ग्रॉस बजटरी सपोर्ट क्यों मांग रहे हैं ? यह तो जादूगर वाली वही बात हुई जो, मैंने आपके आने से पहले कही कि चादर पर नोट दिखाता है, बाद में कटोरा लेकर पैसे मांगते है । मै पूछना चाहती हूँ आपसे कि आपके इस 25,000 कैश सरप्लस मे से इन्वेअस्टिबल सरप्लस कितना है ? आपने रेलवे का एकाउंटिंग सिस्टम बदला है और यह बात मैं नहीं कह रही हूं, यह बात रेलवे के एक्स फाइनेंशियल कमिशनर्स कह रहे हैं । उपसभापति जी, अक्तूबर, 2007 में आउटलुक में एक आर्टिकल आया था,

उस समय मैंने देखा था कि इनके एक्स फाइनेंशियल कमिशनर्स ने रेलवे बजट की पोल खोली थी, मैं वह आपके सामने पढ़कर सुनाना चाहती हूं । लालू जी, श्रीमती विजय लक्ष्मी विश्वनाथ, आपकी एक्स फाइनेंशियल कमिशनर, है -

"The Railwa mder Lalu has altered the way the balance-sheet is presented. It has

resulted in revenue getting inflated artificially." यह मैं नहीं कह रही हूं, यह इनके रेलवे मंत्रालय की फॉरमर फाइनेंशियल कमिशनर कह रही हैं। दूसरी टिप्पणी –

यह मैंने नहीं कहा, यह आपके फॉरमर फाइनेंशिनर्स कह रहे हैं । इसलिए मैं आपसे जानना चाहूंगी कि आपके पूर्ववर्ती मंत्री जिस तरह से बजट बनाते थे, जिन मदों के आधार पर बजट बनाते थे, आप क्या उसी तरह से बजट बना रहे है और पेश कर रहे हैं या आपने उसमें भी कोई जादूगरी करने का काम किया है ? जादू हैं।

इसके बाद आप दावा करते हैं कार्यकशुलता का । कार्यकुशलता सबसे ज्यादा रेलवे की पंक्चएलिटी में दिखाई देती है। आम आदमी रेलवे की कार्यकुशलता को देखता है – कितने बजे रेल छूटती है, कितनी बजे रेल पहुंचती है , क्या समय से छूटती है, क्या समय पर पहुंचती है। आम आदमी की रेलवे की कार्यकुशलता जांचने की यह एक ही कसौटी है। लेकिन, मैं आपकी कार्यकुशलता की पोल खोलती हूं, मैं स्वंय भुग्तभोगी हूं किसी और की बात नहीं कर रही, लालू भाई। जिस दिन आप सदन में खड़े होकर अपना बजट पेश करते हुए अपनी पीठ थपथपा रहे थे, उसी दिन 26 फरवरी की रात को मेरे पति और आपके मित्र, श्री स्वराज जी को तमिलनाडु एक्सप्रेस से इटारसी जाना था । तमिलानडु एक्सप्रेस रात को 10:30 बजे नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से छूटती है। वे रात 09:45 बजे घर से गए। वहां से उनका रात 10:15 बजे फोन आया कि गाडी तो रात को 01:45 बजे छूटेगी, मैं वापिस आ रहा हूं यहां बैठकर क्या करूंगा। वे वापिस आए। चूंकि रेल मंत्री आप थे, इसलिए उन्होंने कोसने का काम नहीं किया, मैं जानती हूं , कोई भी और रेल मंत्री होता तो वे उसको बहुत कोसते। वे चुपचाप आकर घर में लेट गए, लेकिन क्रोध और क्षोभ की रेखाएं उनके माथे पर साफ दिखाई दे रही थी। मैं पूछना चाहती हूं आपसे कि जो गाडी दिल्ली से बनकर चलती है, पीछे से नहीं आती, अगर उस गाडी की यह हालत है कि वह रात 10:30 बजे की बजाए कि 01:45 बजे छूटती है तो उन गाडियों की क्या हालत होती होगी, जो पीछे से आती है? आप सोच सकते है, रात 01:45 बजे जाने का क्या मतलब होता है? सारा स्टाफ जागता रहा, **वह ड्राइवर, जो उनको लेकर जाने वाला था, वह जागता रहा, उनके साथ उनके एक मित्र जाने वाले थे, उनका बेटा उन्हें** छोडने आया था, वह हमारे घर में बैठकर 01:45 बजे तक जागता रहा। मैं पूछना चाहती हूं लालू भाई कि क्या इस तरह के परिवार के लोगों की कठिनाइयों को समझने का कोई खाता रेल मंत्रालय में है या नहीं ? मैं यह गलतबयानी नहीं कर रही , आप जाकर अपने रेल मंत्रालय से पता लगवा लीजिए कि 26 तारीख की रात को तमिलनाडु एक्सप्रेस कितने बजे छूटी थी, पता लगवा लीजिए कि उस दिनश्री स्वराज कौशल उसमें सफर कर रहे थे या नहीं ? मैं गलतबयानी नहीं कर रही हूं, लेकिन मैं आपको झकझोरना चाहती हूं, कि जिन बातों का दावा आप बजट में करते हैं, उनको जमीन पर परिलक्षित होने दीजिए। स्टेशनों की टूटफूट, प्लेटफार्मो का रख-रखाव, गाडियों का साफ-सुथरापन, गाडियों का समय पर चलना और समय पर छूटना-ये वे दावे हैं, जो जमीन पर खोखले दिखाई देते हैं। इसलिए मैं आपसे कहना चाहती हूं कि अगर आप कार्यकुशलता का दावा करते हैं, तो उसकी मॉनीटरिंग भी करिए। एक और दावा आपने किया है निर्माण कार्यो की प्रगति का। मैं आपसे पूछना चाहती हूं लालू भाई कि जिन बातों की आप घोषणा करते हैं, क्या कभी इनका रिव्यू भी करते हैं ? आपने Dedicated freight corridor की घोषणा कब की थी, याद दिलाऊ **आपको कि** हम एक पूर्वी और पश्चिमी फ्रेट कॉरिडोर का निर्माण करने जा रहे हैं, कहा था न ? उसके बाद आपने अगस्त, 2005 में लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री के मुख से कहलवाया था कि हम एक पूर्वी और पश्चिमी फ्रेट कॉरिडोर का निर्माण करने जा रहे हैं , कहलवाया था न ? उसके बाद आपने अपने 2006-07 के बजट भाषण में इसे फिर दोहराया था। मैं बताती हूं, आपको , आपने अपने भाषण में कहा था – "फ्रेट कॉरिडोर का निर्माण – महोदय , मैंने 2005-06 के रेल बजट पर हो रही बहस का जवाब देते हुए , स्वर्णित चतुर्भुज और उसके विकर्णो पर समर्पित फ्रेट कॉरिडोर का निर्माण करने के महत्व से सदन के अवगत कराया था। मुझे सदन को यह जानकारी देते हुए खुशी हो रही है कि 22,000 करोड़ रूपए की अनुमानित लागत पर पश्चिमी और पूर्वी भागों पर समर्पित, कंप्यूटराइज्ड कंट्रोलयुक्त मल्टी मॉडल हाई एक्सेल लोड फ्रेट कॉरिडोर की दोनों परियोजनाओं को इस वर्ष की कार्य योजना में शामिल किया गया है।" यह आपका भाषण है 2006-07 का। वर्ष 2005-06 में आपने अवगत कराया, अगस्त, 2005 में प्रधान मंत्री जी से कहलवाया और 2006-07के बजट भाषण में सदन को अवगत कराया। उसके बाद 2007-08 के भाषण में आपने क्या कहा ? आपने

कहा कि –"डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर का निर्माण – पूर्वी और पश्चिमी डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर का निर्माण कार्य वर्ष 2007-08 में आरम्भ किया जाएगा, " यह आपने कहा, यह आपका 2007-08 का भाषण है। वर्ष 2005 में आपको विचार आया, 2005 के अगस्त में प्रधान मंत्री ने कहा, 2006 और 2007 में आपने सदन में अवगत करा दिया, पूरा साल कुछ नहीं हुआ, 2007-08 में आपने कहा कि निर्माण कार्य आरम्भ हो जाएगा और इस बार फ़िर 2008-09 में मैं पैरा 78 आपको पढ़कर दिखाती हूं, जहां आपने कहा है कि – " स्वर्णिम चतुर्भुज एचडीएन का सबसे व्यस्त एवम महत्वपूर्ण हिस्सा है । मुझे सदन को यह सूचना देते हुए हर्ष हो रहा है कि लुधियाना से कोलकाता के निकट स्थित दानकोनी तक पूर्वी फ्रेट कॉरिडोर और दिल्ली से जेएनपीटी के बीच बनने वाले पश्चिमी कॉरिडोर को स्वीक्रति दे दी गई है। मै सम्मानित सदन को आश्वस्त करना चाहूंगा कि वर्ष 2008-09 के दौरान इन दोनों परियोजनाओं का निर्माण कार्य आरम्भ कर दिया जाएगा ।"

अगर आज स्वीक्रति दी गई है, तो सन 2006-07 में क्या था, 2007-08 में क्या था? आप 2007-08 में भी कहते है कि निर्माण कार्य आरम्भ हो जाएगा और 2008-09 में यानी इस बार के बजट भाषण में भी कहते हैं कि मैं सदन को आश्वस्त करना चाहूंगा कि निर्माण कार्य आरम्भ हो जाएगा। हम कैसे मानें आपका आश्वासन , कौन सी विश्व्सनीयता इसके पीछे दिखाई पड़ रही हैं ? इस आश्वासन के पीछे क्या है ? एक डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर , जो आप की महत्वाकांक्षी परियोजना है ,2005 से 2008-09 तक सदन यह सुनता आ रहा है कि बनेगी, बनेगी, बनेगी, बनेगी,लेकिन अभी तक एक ईंट भी उस कॉरिडोर में नही लगी है, यह सच है। यह केवल फ्रेट कॉरिडोर का हाल नहीं है। रायबरेली में एक प्रोड्क्शन फ़ैक्टरी लगने वाली थी, क्या हुआ उसका ? छपरा में एक फ़ैक्टरी लगने वाली थी, क्या हुआ उसका? आप नयी दिल्ली के रेलवे स्टेशन को विश्व स्तरीय बनाने वाले थे, क्या हुआ उसका ? सन 2004 में बिहार में नवीनगर रेल बिजली कारखाना का शिलान्यास हो गया था, उसक क्या हुआ? लालू भाई, आपके Railway Development Authority से बजट होटल बनने वाले थे, उसका क्या हुआ? अगर मंत्रालय के मुखिया के मुंह से कही गई बातें पूरी नहीं होगी तो लोग किस पर विश्वास करेंगे, यह मैं आपसे पूछना चाहती हूं? मैंने आपके 2005 से 2008-09 तक के भाषण को पढ़कर बताया है। हम आपके आश्वासन पर कैसे विश्वास करें, कैसे भरोसा करें? इस बार आपका पूरा भाषण भावी योजनाओं से भरा हुआ है, लेकिन यकीन नहीं होता कि वे योजनाएं पूरी होंगी, क्योंकि आप कछुए की चाल से चल रहे हैं।

मैं मध्य प्रदेश से आती हूं। मध्य प्रदेश में अभी आपने दाहौद-इंदौर-बरास्ता सरदारपुर और धार का 200.97 किलोमीटर रेलवे लाइन का भूमि पूजन करवाया है। आपने करवाया है न? यह 678 करोड़ रुपय की योजना है। आपने इसके लिए कितना प्रावधान किया है? आपने सिर्फ़ बीस करोड रुपए का प्रावधान किया है। लालू भाई, अगर इसी गति से काम होगा तो इसे पूरा होने में तीस साल लग जाएंगे । रामगंज मंडी से भोपाल की 262 किलोमीटर पर रेलवे लाइन बिछाने की एक दूसरी परियोजना है, जो 628 करोड़ रुपए की परियोजना है। आपने इसके लिए सिर्फ़ तीस करोड़ का प्रावधान किया है। इस गति से काम होगा तो इसे पूरा होने में बीस साल लगेंग़ा। ललितपुर- सिंगराएली भी हम नई रेल लाइन चाहते थे, आपने बजट में इसके लिए एक भी पैसा नहीं दिया है । अगर इसी तरह से इतनी-इतनी कम राशि का प्रावधान करेंगे तो कैसे परियोजनाएं पूरी होंगी?

इसमे भी आपने नई पेंच लगा दिया है । आप राज्यों से कह रहे हैं कि आप पचास फ़ीसदी पैसे दोगे तो हम आपके प्रस्ताव स्वीकार करेंगे । यह नई नीति कहां से आई है? आज तक सारी रेल लाइन रेल मंत्रालय अपने पैसे से बिछाती रही है, कभी राज्यों से एक पैसा नहीं मांगां और अब जब कि रेलवे पच्चीस हजार करोड़ कैश सरप्लस लेकर घूम रही है तो राज्यों से आपको पैसा चाहिए? आप तो राज्यों से आपको पैसा चाहिए? आप तो स्वयं मुख्य मंत्री रहे हैं। आप जानते है कि राज्य सरकारें किस वित्तीय संकट से जूझ रही हैं। राज्य सरकारें कहां से पैसा लाएंगी? आप जरा कल्पना कीजिए, अगर आप मुख्य मंत्री होते और नितिश कुमार रेल मंत्री होते और यह घोषणा उनके दारा होती तो आप क्या प्रतिक्रिया करते ? लेकिन आज आप राज्यों से पैसा मांग रहे हैं।

मैं मध्य प्रदेश की बात करना चाहती हूं । मध्य प्रदेश में रेल लाइन का घनत्व पन्द्रह किलोमीटर प्रति सो वर्ग किलोमीटर है, जब कि पूरी देश का औसत सौ वर्ग किलोमीटर के पीछे अठारह किलोमीटर है। अगर आप यह नीति लाए भी हैं तो कम से कम उन राज्यों, को बख्श दीजिए, जिन राज्यों की घनत्व राष्ट्रीय घनत्व राष्ट्रीय घनत्व औसतन से कम है। बाकी राज्यों

में अठारह किलोमीटर रेलवे ने, केन्द्र ने अपने पैसे से पूरा किया है । मध्य प्रदेश में वह अभी अठारह तक पहुंचा भी नहीं है और आपने उससे पैसा मांगना शुरू कर दिया । वह पैसा कहां से लाएंगे ? हमें तो समझ नहीं आ रहा है । जो रेल लाइनें नई बिछ रही है उसके प्रस्तावों पर खुशी मनाऊ या प्रधान मंत्री द्वारा किए गए भूमि पूजन पर झूमूं या आपके इस बीस करोड़ो को देखकर रोऊं । आप बताइए कि राज्य सरकारों कहां से पैसा लाएंगी ? कैसे उनके प्रस्ताव पूरे होंगे ?

लालू भाई, दरअसल दिक्कत यह है कि आप कुछ भी करते हैं, तो उसमें फच्चर फंसा देते हैं । आप एक तरफ कहते हैं कि भाडे में कमी करेंगे तो दूसरी तरफ फच्चर फंसा देते हैं, जब कोचों में नई सीटें बढ़ेगी, तब भाड़े में कमी आएगी । आप कहते हैं, कि नई ट्रेनें चलेंगी ...(**व्यवधान**)....

रेल मंत्री (**श्री लालू प्रसाद**) : आपने जो प्रसंग छेड़ा है, आप पहले पूरा पढ़ लीजिए । ...(**व्यवधान**)....

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैं हर चीज को पढ़ चुकी हूं । ...(**व्यवधान**)....

श्री लालू प्रसाद : उसमें लिखा है कि जो नया एलएचबी कोच बना है, उसमे दस प्रतिशत ही रहेगा, बाकी सारी ट्रेनों में पांच प्रतिशत इस साल कटौती होती । आप आर0 एस0 एस0 का संपादकीय भी पढ़ लीजिए और रेलवे का भी पढ़ लीजिए कि उसमें क्या लिखा है ...(**व्यवधान**)....

श्री मती सुषमा स्वराज : मैं आपको पढ़ कर सुना दूं ...(**व्यवधान**)....

श्री लालू प्रसाद : आप पढ़िए । ...(**व्यवधान**)....

श्रीमती सुषमा स्वराज : उसमें भी आपने पॉपुलर ट्रेन और साधारण ट्रेन का फच्चर फंसाया है...(**व्यवधान**).... "इस वर्ष में भी मैं इन किरायों में और दो प्रतिशत कमी करने की घोषण करता हूं । गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी पॉपुलर ट्रेन एवं पीक पीरियड के दौरान यह कमी आधी रहेगी । इस प्रकार दो वर्षो में इनके किराये में लीन सीजन में 10 प्रतिशत और पीकर सीजन में 5 प्रतिशत की कमी होगी, लेकिन पॉपुलर ट्रेन के यात्री किरायों में पूरे साल यह कमी 5 प्रतिशत रहेगी ।"

श्री लालू प्रसाद : पढ़ लिया ? यह एल0एच0बी0 कोच की सीटों में बढोतरी हुई है और यह थ्री-टियर का है ...(**व्यवधान**)....

श्रीमती सुषमा स्वराज : ऐसा है लालू भाई ...(**व्यवधान**)....

श्री लालू प्रसाद : यह प्रसंग है । बाकी सारी ट्रेनों में 5 प्रतिशत की कमी, ए0सी0 वगैरह सब छोड़कर , यह है उसका अभिप्राय ।

श्रीमती सुषमा स्वराज : लालू भाई ,मैंने इसका एक-एक शब्द पढ़ लिया और इसमें आपके जादूगरी के शब्द भी निकाल लिए ।

श्री लालू प्रसाद हां, हां ठीक है ।

श्रीमती सुषमा स्वराज : वे सारी चीजें निकाल लीं, जो आप फच्चर फंसाते हैं। जब नई ट्रेन आप चलाते हैं , तो आप फच्चर फंसा देते हैं कि जब नई रेल लाइन बिछेगी, तब ट्रेन चलेगी और आपने तो ...(**व्यवधान**)....

श्री लालू प्रसाद : **हां तो** फिर..... आप यह correct कर लीजिए, थोड़ा जवाब देना भी जरूरी हो गया है । आठ के पहले के सारे पन्नों को पढ़कर देख लीजिए, जिस लाइन में 99 परसेंट काम पूरा हो गया है , महीने-दो में पूरा होना है और सेफ्टी कमिशनर की रिपोर्ट आनी है, अगले साल जो गाडी देनी है, तो एक साल जो गाडी की घोषणा होती है कि हम उसको टाइम से चलाएंगे, लेकिन next budget आने से पहले सब गाडियों को चलाना पड़ता है, यह वह है ।

श्रीमती सुषमा स्वराज : यह व नहीं है लालू भाई ।

श्री लालू प्रसाद : यह वह है ।

श्री मती सुषमा स्वराज : मैं बताती हूं । अभी तो भाभी आपकी जान खांएगी, क्योंकि आपने चकमा देने में उन्हें भी नहीं

छोड़ा । हाजीपुर-फ़ुलवारिया जो नई ट्रेन आपके ससुराल जाती है, उसमें भी आपने फ़च्चर फ़ंसा दिया कि ...(**व्यवधान**)....

श्री लालू प्रसादः अरे । बता दिया है।

श्रीमती सुषमा स्वराजः जब नई लाइन बनेगी, तब ट्रेन चलाएंगे ।

श्री लालू प्रसाद : ससुराल और फ़ुलवरिया नहीं, यह भटनी जा रही है। जहां ९९ प्रतिशत काम पूरा हो गया, उसमें मैंने स्वीकार किया कि जहां पूरा हो गया है, उसमें एक पैसेंजर गाडी हम अगले वित्तीय वर्ष में ...(**व्यवधान**)....

श्री एस0 एस0 अहलुवालियाः वह तो लालू जी नहीं चाहते कि भाभी मायके जाए, इसलिए नही चाहते।

श्रीमती सुषमा स्वराज : एसा है, लालू भाई, मैंने आपका पूरा बजट भाषण पढ़कर वे शब्द निकाल लिए, जिनके इर्द- गिर्द आपकी जादूगरी घूमती है। बताऊं क्या हैं?

श्रीमती सुषमा स्वराज : Rationalisation, reclassification, peak season,lean season, popular train, unpopular train, युक्तिकरण, बाजार की स्थितियों के अनुरूप। जब आपको कुछ भी करना होता है, आप इन शब्दों की आड़ लेकर चुपचाप बचकर निकल जाते हैं। अभी एक नया फ़च्चर बताती हूं आपने एक नया फ़च्चर फ़साया। पूरे के पूरे कुली **झूम रहें हैं।** झूम रहें हैं न?

श्री लालू प्रसादः हां।

श्रीमती सुषमा स्वराज : दुआएं दे रहे हैं, नाच रहे हैं, क्यों? क्योंकि आपने कहा कि कुलियों को आप गैंगमैंन या चतुर्थ श्रेणी में भर्ती कर देंगे। कहा है न आपने? पर उनको मालूम नही, वे बेचारे ज्यादा पढ़ – लिखे नहीं हैं। आपने उसमें भी एक फ़च्चर फ़ंसा दिया, पढ़कर बताऊं आपको? लीजिए, बताती हूं।...बताती हूं। यह देखिए ...(**व्यवधान**)....

श्री लालू प्रसादः पढ़िए...फ़च्चर बताइए।

श्रीमती सुषमा स्वराज : फ़च्चर बताती हूं, वह फ़च्चर आपको बताती हूं। यह देखिए-'' लाइसेंसधारी कुलियों की वर्षो पुरानी मांग के मद्धेनजर'' अब फ़च्चर आ गया,'' समुचित स्क्रीनिंग कर लाइसेसधारी कुलियों को वन टाइम बेसिस पर रेलवे में गैंगमैन एवं चतुर्थ वर्ग के अन्य पदों पर नोकरी दी जाएगी ।'' यह जो समुचित स्क्रीनिंग है न, यह फ़च्चर है।

...(**व्यवधान**)....

श्री लालू प्रसादः यह बेकार की बात है।

श्रीमती सुषमा स्वराज : अब यह किसी को पता नहीं है। ...(**व्यवधान**).... **और** मैं आपको बताऊं, यह जो समुचित स्क्रीनिंग है न, इसमें आधे से ज्यादा कुली निकल जाएंगे। कहीं उनकी उम्र आड़े आएगी, कही उनकी पढ़ाई आड़े आएगी, कहीं उनकी फ़िजिकल फ़िटनेस आड़े आएगी, पचासियों चीजें हैं। ...(**व्यवधान**).... अब एक मिनट ... न तो इस समुचित स्क्रीनिंग का कोई आधार आपने बताया। इसमे तो अगर आप यह कह देते कि भाई, इसमें तीस बरस से ऊपर वाले ...(**व्यवधान**)....

श्री लालू प्रसाद : आप लोगों को अपच हो रहा है?आप लोगों को अपच हो रहा है, इसका तो कोई इलाज हमारे पास नही है।

श्रीमती सुषमा स्वराज : नहीं, अपच कहां से?

श्री लालू प्रसाद : अपच हो रहा है। भाजपा के पेट में कब्ज हो गया है, पचा नहीं पा रहे हैं। **श्रीमती सुषमा स्वराज :** लालू भाई, कुछ खिलाया होता, तो अपच होता। यह तो जादूगरी में दिखाया ही दिखाया है, खिलाया तो है ही नहीं।

श्री लालू प्रसाद : आगे देखते जाइए न, आगे।

श्रीमती सुषमा स्वराज : अपच तो तब होता लालू भाई, अगर कुछ खिलाया होता। यही तो मै कह रही हूं कि जादू भर दिखाया है, खिलाया तो है नही। भोजन दिख रहा है। ...(**व्यवधान**)....

प्रो. राम देव भंडारी (बिहार) **:** मैडम, देखने का नजरिया है, जरा अच्छी नजर से देखिए , सब कुछ साफ़ दिखाई पड़ेगा ।

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैंने देख दिया है । अब यह फच्चर है समुचित स्क्रीनिंग का, जो मैं आपको बता रही हूं और वे सारे कुली जो नाच रहे हैं, गा रहे हैं, झूम रहे हैं ,जिस दिन इस समुचित स्क्रीनिंग में वे आधे से ज्यादा निकल जाएंगे, उस दिन वे आपको बददुआएं देंगे । ये फच्चर आप फंसाते हैं, आपकी आदत है ।

श्री लालू प्रसाद : कोई फच्चर नहीं है । हम उन्हीं के आदमी है ।

श्रीमती सुषमा स्वराज : अब मैं आपको चार सुझाव देती हूं, आप सुन लीजिए । बहन के सुझाव हैं, आपके काम आएंगे । पहला सुझाव यह है कि आपने विजन – 2025 की बात की है । विजन -2025 में आपने कहा है कि मैंने दो ध्येय वाक्य रखने हैं – एक आराम और एक सुविधा । मैं आपको कहना चाहती हूं कि आराम और सुविधा तो एक दूसरे के पर्याय देते हैं । इन ध्येय वाक्यों को रखिए –सुविधा और सुरक्षा । आराम कब मिलता है ? अगर आप सुविधा देंगे तो आदमी आरामदेह यात्रा करेगा । आराम तो मिल जाएगा । लेकिन व्यक्ति क्या चाहता है - आरामदेह यात्रा और सुरक्षित यात्रा । इसलिए आप ये ध्येय वाक्य बदलिए और उसकी जगह रखिए- सुविधा और सुरक्षा । ये दोनों ही रेल का ध्येय होना भी चाहिए । मेरा पहला सुझाव यह है । मुझे लगता है कि आप इसे मान लेंगे । मेरा सुझाव विशेष गाडियों के संबंध में है। आप कुछ विशेष गाडियां चलाते हैं । आपने इसमें भी कहा है कि आप मदर-चाइल्ड हेल्थ एक्सप्रेस चलाने वाले हैं । यह 1857 की डेढ़ सौवीं वर्षगांठ का साल है । मेरा आपको सुझाव है कि आप उन क्रांतिकारियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए एक गाडी 1857 एक्सप्रेस चलाइए जिसमें 1857 के क्रांतिकारियों के चित्र लगाइए । बच्चों को मालूम नहीं है । हम अपने राष्ट्रनायकों को भूल चुके हैं। वे क्रांतिकारी जिन्होंने 1857 में कुर्बानियां दी, जिनकी **शहादत हुई**, स्वतंत्रता **सग्राम में जिन्होने हिस्सा लिया,उनके चित्र लगाकर आप गाडियां चलाएं । यह सुझाव भी आप मान** जाएंगे । तीसरा आपने एड्स पीडितों को एक राहत दी है ।

श्री लालू प्रसाद : लड़कियों के बारे में जो किया ....(**व्यवधान**)...

श्रीमती सुषमा स्वराज : उसका मैं स्वागत कर रही हूं ।

श्री लालू प्रसाद : उसके बारे में आप कहां बोलीं ?

श्रीमती सुषमा स्वराज : अभी आ रही हूं । मैं दोनों चीजों का स्वागत कर रही हूं । जो आपने छात्राओं को स्नातक तक की पढ़ाई के लिए छूट दी है, मैं उसका स्वागत करती हूं । जो आपने सीनियर सिटिजंस को छूट दी है, उसका भी मैं स्वागत करती हूं । लेकिन जो आपने आरपीएफ में महिला आरक्षण रखा है, वह कम है । सिपाहियों में आपने पांच परमेंट रखा है । वह पांच परसेंट कम है क्योंकि हर जगह यह कहा गया है कि हर पुलिस में 10 प्रतिशत का पुलिस बल महिलाओं का होगा । इसलिए उसको बढ़ाकर कम से कम दस प्रतिशत कर दीजिए – यह सुझाव भी मैं देने जा रही थी । पहले दोनों का मैं स्वागत करती हूं । महोदय, मैं एड्स पीड़ितों की बात कर रही थी । जो एड्स पीडित इलाज के लिए जाएंगे, उनको आपने राहत देने की बात की है । मैं आपको एक बात बता दूं, एड्स की सही और सच्ची जानकारी के बिना उन यात्रियों का अहित होगा । अभी भारतीय परिवेश में एड्स के बारे में सही जानकारी नहीं है । लोक समझते हैं कि यह छूत की बीमारी है । लोग समझते हैं कि एड्स पीडित से हाथ मिलाने से एड्स हो जाती है, साथ बैठने से एड्स हो जाती है, साथ खाना खाने से एड्स हो जाती है । मैंने स्वास्थ्य मंत्री के तौर पर इस जानकारी को देने का एक बड़ा अभियान चलाया था कि ये सारी बातें, ये सारी धारणाएं मिथ्या हैं, गलत है । मेरे समय में एक घटना घट गयी थी । केरल में दो बहन-भाई, जो एड्स पीडित थे, - बेंजी और बेन, उनको स्कूल से निकाल दिया था क्योंकि जब उनके नाना-नानी ने आकर कहा कि उनको एड्स है तो बाकी तमाम जो मां-बाप थे, उन्होंने जाकर स्कूळ में कहा कि हमारे बच्चे साथ नहीं पढ़ेंगे । मैं स्वयं केरल गयी थी । उन दोनों बच्चों को गोद में बिठाया था, फोटों खिंचाई थी, उन्हें प्यार किया था ताकि लोगों को यह पता लगे कि एड्स पीडित से हाथ मिलाने से, उन्हें गोद में बिठाने से एड्स नहीं होती । आप अपने डिब्बों में यह जानकारी लिखवाइए कि एड्स पीडित से हाथ मिलाने से एड्स नहीं होती है, साथ बैठने से एड्स नहीं होती, खाना खाने से एड्स

नहीं होती । इसी प्रकार टिकट के पीछे लिखवाइए, वरना ये एडस पीडित जब अपनी टिकट टी0टी को दिखाएंगे तो लोग इन्हें गाडी से नीचे उतार देंगे । इस प्रकार आप इनका अहित करेंगे । इसलिए इस घोषणा को अगर आप वाकई पूरा करना चाहते हैं तो आप जानकारी वहां लिखवाइए । चौथा सुझाव मैं यह देना चाहती हूं कि ये जो आपके जादूगरी के शब्द हैं, जिनकी आड़ में आप बचकर निकल जाते हैं, यह जादूगरी समाप्त करिए और साफगोई से बात करना शुरू करिए ये मेरे सुझाव हैं । आपको शेरों में बात सुननी, कहनी बडी पसंद है । मैंने देखा कि आपका पूरा का पूरा, बजट भाषण कच्चे-पक्के दोहों से भरा हुआ है । किसी भी दोहे मे न काव्यात्मकता है न लालित्य-कोरी तुकबंदी है । लेकिन मुझे यह लगा कि तुकबंदी में आपको बात ज्यादा अच्छी लगती है इसलिए मैं भी अपनी बात अगर एक तुकबंदी से खत्म करूं तो ज्यादा अच्छा होगा । इसलिए मैंने एक तुकबंदी गढ़ ली । मैं उस तुकबंदी से बात अपनी खत्म करना चाहती हूं :

इतराने की कोई बात नहीं, इतना तो मैं दूं बता,
चतुराई मेरे भाई की, बताने की की है खता ।

बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री राजीव शुक्ल (महाराष्ट्र) : धन्यवाद उपसभाध्यक्ष महोदय । मैं आदरणीय सुषमा जी के ओजस्वी भाषण के बाद रेल बजट पर अपने विचार व्यक्त कर रहा हूं । अगर लालू जी को वह जादूगर कहती हैं, तो शायद मैं रेल बजट पढ़कर कह सकता हूं कि सुषमा जी को भाषण की जादूगरी आती है । कैसे तथ्यों को किस ढंग से पेश कर देना कि असली तथ्य छिप जायें और गलत तथ्य सामने आ जायें, इसके लिए मैं निश्चित रूप से उनकी प्रशंसा करना चाहूंगा । अगर ऐसी बहने लालू जी को लगातार मिलती रहे और उनके बधाई संदेश मिलते रहें, तो मुझे लगता है कि उनकी राजनीति कैसी होगी, यह वह खुद समझ सकते हैं ।

लोकतंत्र में आलोचना होती है, आलोचना करनी भी चाहिए और विपक्ष को खासतौर से जहां जितनी आलोचना सम्भव हो, वह करनी चाहिए । लेकिन यदि कहीं कोई प्रशंसा योग्य काम हुआ है, यदि कहीं कोई प्रशंसा योग्य बात है, तो उसकी तारीफ भी करनी चाहिए । इस तथ्य से कोई इन्कार नहीं कर सकता है कि आज भारतीय रेल पिछले साढ़े तीन साल में विश्व बैंक की गुलामी से बाहर आ गयी है । पहले जिस तरह के योजनाओं के लिए विश्व बैंक के हाथ-पैर जोड़ने पड़ते थे, अब वैसी स्थिति नहीं है । इस बात से कौन इन्कार कर सकता है कि जब रेलवे कर्जे में डूबा हुआ था, जब डा0 मनमोहन सिंह जी की सरकार आयी और लालू जी रेल मंत्री बने हैं तब तकरीबन 2900 करोड़ का घाटा रेलवे को था और राकेश मोहन कमेटी ने कहा था कि रेलवे का डिस-इन्वेस्टमेंट कर दो । उस समय से अगर रेलवे को 25 हजार करोड़ का फायदा हुआ है, साढ़े तीन साल में यह चमत्कार नहीं तो और क्या है ।

श्री लालू प्रसाद : 69 करोड़ का फायदा हुआ है, वह तो एक साल का है ।

श्री राजीव शुक्ल : जो प्लान साइज है, वह 38 हजार करोड़ बढ़ गया है और सिर्फ 18 प्रतिशत पैसा फाइनेंस मिनिस्ट्री से लेना पड़ता है , वह बजटरी अलोकेशन में आता है, जो किसी जमाने में 60 प्रतिशत से ऊपर होता था । हर काम के लिए रेल मंत्री को वित्त मंत्रालय के चक्कर लगाने पड़ते थे और वह भी 18 प्रतिशत जहां सोशल सर्विसिज हैं, चाहे जम्मू-कश्मीर की रेलवे लाइन बननी है, या नार्थ-ईस्ट के कॉरिडोर हों । उन्होंने सिर्फ 18 प्रतिशत की निर्भरता वित्त मंत्रालय पर कर दी और इतना लम्बा मुनाफा रेलवे को कर दिया है एक सरकारी विभाग होते हुए, सोशल ओबलीगेशन को पूरा करते हुए, तो ऐसा जादूगर तो हमें स्वीकार है, चाहे वह अम्बाला का हो या पटना का हो, ऐसा जादूगर इस देश को चाहिए । वह कहती हैं कि अम्बाला का कोई जादूगर उन्होंने देखा, तो फर्जी नोट बनाता था, तो यह पटना वाला जादूगर जो असली काम करता है, यह फर्जी काम करने वाला जादूगर नहीं है ।

उपसभाध्यक्ष महोदय, किराये कम होने की बात विवादों के घेरे में लायी जा रही है, उसे विवादास्पद बताया जा रहा है कि यह सिर्फ शब्दों की बाजीगरी है और एक्च्युअली किराये कम नहीं हुए है । शब्दावली कोई भी लगायी गयी है, चाहे पॉपुलर ट्रेन्स के नाम पर हो, चाहे पीक सीजन के नाम पर हो, लेकिन अगर हम मोटी बात पकड़ें, तो पांच प्रतिशत की कमीतो है । चार साल से रेलवे के किराये बढ़ाये नहीं जा रहे हैं और कमी की जाती है, उसके बाद रेलवे का प्लान साइज बढ़ता है, खर्च बढ़ाया जाता हैं, नई योजनाएं शुरू हो रही है । डिब्बे बढ़ रहे हैं, इन सबके बावजूद अगर मुनाफा होता है, किरायें नहीं बढ़ते हैं, तो उसकी सराहना होनी चाहिए या आलोचना होनी चाहिए, यह बात मैं जानना चाह रहा हूं । जब

इन्होंने रेलवे मंत्रालय का काम संभाला था, तो चारों तरफ एक माहौल था कि अब रेल भवन भी बिहार भवन बन जाएगा, अब तो साहब, रेलवे का बेड़ा गर्क हो जाएगा, लेकिन आज वह बात कोई नहीं कहता। आज अगर कोई भारी आलोचक हैं तो वे चुप हैं और जो निष्पक्ष हैं वे खुलकर तारीफ कर रहे हैं। इन्होंने कहा कि हम न तो रेलवे का डिस-इंवेस्टमेंट करेंगे और न ही हम डाउन साइज करेंगे, भर्ती भी जारी रहेगी। यह था कि भर्ती में कटौती कर दीजिए और न हम इसका प्राइवेटाइजेशन होने देंगे। अब मैं यह जरूर बताना चाहूंगा कि इन्होंने क्या जादूगरी की है, जिस जादूगरी ने रेलवे के भाग्य को बदल दिया है। इन्होंने सिम्पल फार्मूला लिया कि जो सोशल ऑब्लिगेशन था, उसका और कॉमर्शियलाइजेशन का एक तरह से समागत करा दिया, साथ ही किराया बढ़ाने की बजाए लोड बढ़ा दिया। इस प्रकार से इन्होंने साढ़े तीन हजार कोच बढ़ाए, जिसमें एक कोच से एक करोड़ रूपए का फायदा होता है। मान्यवर, पिछली सरकार के लोगों ने जो विदेश से छः हजार हार्स पावर का इंजन खरीदा था , उससे वे केवल 14 से 18 डिब्बे तक चला रहे थे, जबकि वह 24 से 26 डिब्बे खींच सकता था। इन्होंने उसमें कोच बढ़ी का काम किया है, क्योंकि इन्होंने गांव का एक सिद्धांत पकड़ा कि अगर गाय नहीं दुहोगे, तो वह बीमार पड़ जाएगी। गाय की जो पूरी क्षमता है, अगर आप उसका दोहन करेंगे, तो आपको फायदा होगा। इसलिए उन्होंने कोच 14 से 26 तक बढ़ाने की कोशिश की, तो उससे लोड बढ़ा। मान्यवर, यदि मैं आपको आकंड़े दूं तो आप पाएंगे कि राजधानी 797 यात्रियों को लेकर चलती है, उसी लाइन पर इन्होंने 1929 पेसेंजर्स का गरीब रथ डाला। राजधानी के एक यात्री पर, एक किलोमीटर पर जो 56 पैसे खर्च होते थे, अब वह घटकर गरीब रथ पर , सिर्फ 32 पैसे आ गया है और 40 से 45 प्रतिशत किराए में कमी आ गई। जो व्यक्ति दो हजार रूपये खर्च करके, राजधानी में टिकट लेता था या इसी तरह की किसी दूसरी ट्रेन में टिकट लेता था, अब वही साढ़े छः सौ रूपए का टिकट हो गया और वही उसकी एयर कंडिशंड यात्रा हो गई। एसी 2 टायर में 64 की 81 सीटे कर दीं, एसी 3 टायर में 72 की जगह 104 सीटें कर के, यह अप-ग्रेडेशन किया है। जब अप-ग्रेडेशन किया तो उसकी वॉल्यूम बढ़ा दी। यह एक सिम्पल सी बात है। इसको कोई भी रेल मंत्री कर सकता है। हमें लगता है कि दिग्विजय सिंह जी हमारी तरफ कातिल निगाहों से देख रहे हैं। उन्हें मौका नहीं मिला। अगर उनको रेलवे का कैबिनेट मिनिस्टर बनाते, तो वे शायद कर देते, लेकिन उन्हें वह अवसर नहीं मिला। पॉपुलर ट्रेन की बात करते हैं, तो कुल साढ़े चार सौ पॉपुलर ट्रेन्स है। ऐसी नहीं कि दो, चार और पांच पॉपुलर ट्रेन्स के किराए में कमी की गई है और जो इनमें एक हजार करोड़ का घाटा था, वह break-even पर आ गया है। पिछले पचास सालो से जो रेलवे सिद्धांत चला आ रहा था, एफोर्डेबिल्टि, जो अफोर्ड कर सके, उस पर ज्यादा किराया लादो और जो एफोर्ड न कर सके सिर्फ उसी की बात करो। इन्होंने समाज के सभी वर्गो के बारे में बात की है। एसी फर्स्ट क्लास का किराया भी कम किया है। एसी टू टायर का किराया कम किया है, थ्री टायर का किराया कम किया और जनरल डिब्बे का किराया भी कम किया है अर्थात् सब यात्री डिब्बों का किराया कम किया है। इससे यात्री रेलवे के प्रति आकृष्ट हुए हैं। पहले इसका जहाज से कम्पटिशन होने लगा था। अगर किसी को बंगलौर जाना हो, तो उसे दो हजार का टिकट एयर डेक्कन या किसी दूसरी एयरलाइंस से 2700 रूपये का मिल जाता था और रेलवे में कोई नहीं आता था, क्योंकि कौन इतने घंटे बर्बाद करें इन्होंने इस किराए को कम करके, आज एयरलाइन्स को कड़ी चुनौती दे दी है। अब कोई एयरलाइंस अपना विज्ञापन नहीं देती कि हमारा किराया ट्रेन से कम है। जो इन्होंने व्यापारिक बुद्धि लगाकर काम किए हैं ..... । उनकी जितनी सराहना की जाए, कम है। प्राइसिंग की जो स्ट्राटेजी बनाई 31 परसेंट ए0सी0 फर्स्ट क्लास में कम किया, ए0सी0 टू का 18 प्रतिशत और ए0सी0 थ्री का 40 परसेंट किराया कम किया है। मान्यवर, पेट्रोल, डीजल पर पांच प्रतिशत की कटौती की है। अब इसका लाभ कंज्यूर को मिलना चाहिए। पेट्रोल, और डीजल की कीमतों में तेल कंपनियों को उसी अनुपात में कमी करनी चाहिए और राज्य सराकरों को भी करनी चाहिए, क्योंकि उसमें पांच प्रतिशत की कमी की है इन्होंने 1970 के कोच बदल दिए रेलवे ट्रैक तो चौड़ा था, लेकिन उनका साइज वही था। उनकी ऊंचाई नहीं थी, जबकि नौ मीटर तक इलेक्ट्रिसिटी की वायर होती है। आप कोच की लंबाई बढ़ा सकते हैं, लेकिन पुराने कोच चल रहे थे। फ्रेट को उन्होंने ऐसे बदला कि माल भाड़े से आमदनी उस दृष्टि से की। इन्होंने उन कोचेस को बदला और चालीस से अठावन डिब्बे का गाड़ी कर दी। उसकी क्षमता इतनी बढ़ा दी कि उसमें बहत्तर टन माल आना शुरू हो गया।

श्री लालू प्रसाद : चोरी भी हो रही थी।

श्री राजीव शुक्ल : अच्छा, चोरी भी चल रही थी। कैपेसिटी बढ़ाने के साथ – 300 मीटर के प्लेटफार्म होते थे और 680 मीटर की गाड़ी होती थी,दो बार में लोडिंग होती थी, दो-दो दिन तक लोडिंग चलती रहती थी, सिर्फ ऑफिस टाइम में

लोडिंग होती थी, बाकी टाइम घर में जाकर बैठाते थे, इन्होंने चौबीस घंटे की लोडिंग कराई । सबसे पहले तो इनके पास जो 350 करोड़ का डिसक्रेशनरी फंड था , उससे प्लेटफार्म की लंबाई बढ़ाकर 680 मीटर की ताकि एक बार में गाड़ी की लोडिंग हो जाए । टर्न अराउंड बढ़ा दिया और हर टर्न अराउंड में इन्हें 65 करोड़ का फायदा होता गया । माल भाड़े से आमदनी बढ़ी और यात्री किराये से इस तरह से आमदनी बढ़ी कि बिना किराया बढ़ाए रेलवे की आमदनी बढ़ती चली गई । इन्होंने एक संकल्प और लिया कि टिकट खरीदने के लिए जो लादन लगती है, हम उसे भी खत्म कर देंगे । आज ई-टिकटिंग का काम शुरू हुआ है । अभी तक दो लाख पैसेंजर पर डे ई-टिकिट्स की सेवाएं ले रहे हैं । इसको चार लाख तक ले जाने की योजना है । 9000 टिकट वेंडर अपोइंट कर रहे हैं । आपको जगह-जगह टिकट मिल जाएगा और 9000 लोगों को नौकरी भी मिलेगी । 1500 कंप्यूटर सेंटर खोल रहे हैं । स्मार्ट कार्ड योजना अलग है । लोकल ट्रेन्स के लिए, मुबंई जैसी जगहों पर , अरबन एरियाज के लिए, आज उसे रेलवे के टिकट के रूप में यूज कर सकते है । इन्होंने 139 का नया कॉल सेंटर चालू किया है । उसमें यह नहीं आता कि इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं । या आपको इसकी सूचना या जानकारी नहीं मिलेगी । 139 लगाइए आपको उस पर तुरंत सारी जानकारी मिलेगी लेकिन लालू जी, अभी उस पर दो घंटे देर से जानकारी मिलती है, बासी सूचना मिलती है । आप ट्रेन पर जी0पी0एस0 सिस्टम लगा रहे हैं, मुझे लगता है कि यह लग जाने के बाद यह सूचना आने लगेगी कि ट्रेन की मौजूदा स्थिति क्या है । उस समय आपके लिए और आसानी हो जाएगी कि यह कैसे काम करता है । मान्यवर, इसमें यह बहुत महत्वपूर्ण योजना "ग्रीन टॉयलेट" की है । मुझे लगता है कि यह बहुत सराहनीय काम है । जिस प्लेटफार्म पर जाइए, रेलवे ट्रेक पर इतनी गदंगी रहती है कि खड़ा रहना मुश्किल है । यह ग्रीन टॉयलेट की जो स्कमी है – इसके लिए कानपुर आई0आई0टी0 के लोगों को भी धन्यवाद देंगे कि उन्होंने इसे डेवलप किया है, ग्रीन टॉयलेट्स के जरिए प्लेटफॉर्म और रेलवे ट्रेक की जो गंदगी है, उसका पूरी तरह से समाधान होगा ।

श्री लालू प्रसाद : अगले तीन साल में पूरी तरह से समाप्त हो जाएगी ।

श्री राजीव शुक्ल : मंत्री जी कह रहे हैं कि अगले तीन साल में पूरी तरह से समाप्त हो जाएगी । रेलवे ट्रेक पर जो मल-मूत्र गिरता था, वह समाप्त हो जाएगा । यह न केवल समाज की सेवा होगी, बल्कि यह देश के लिए भी एक बहुत महत्वपूर्ण चीज है । जो वेस्ट होगा, डिस्पोजल होगा उसका किस तकनीक से क्या फायदा ले सकते है, यह भी देखने की बात हैं । मैं उनको इसका सूझाव देना चाहता हूं । महिलाओं, स्टूडेंट्स और वृद्धों की रियासत का जिक्र स्वयं सुषमाजी ने किया है, मुझे लगता है कि यह आपने एक बहुत अच्छी चीज की है । इसकी जितनी सराहना की जाए, कम है । **कमर्शियल एक्सप्लाएटेशन की एक स्कीम चल रही है के लाखों एकड़ में रेलवे की जमीन पडी हुई है। उसका कोई यूज** नहीं है । एक पर कब्जे हो रहे है, तरह-तरह के लोग उस पर जम जाते हैं, बहुत मिसयूज हो रहा है । रेलवे के करीब 14 लाख में से सिर्फ 6 लाख एम्प्लाएज को क्वार्टर मिले हुए है । बाकी employees के पास क्वार्टर नहीं है और है भी तो बहुत पराने छः लाख लोगों के घर है । इनके नवीकरण की एक योजना है कि उनको सुधार कर नया बनाया जाए, किस तरह से ज्यादा –से-ज्यादा रेलवे कर्मचारियों को क्वार्टर मिलें उसमें मुम्बई में जो slum rehabilitation योजना है लगभग उसी मॉडल को लेते हुए ये उसका commercialization करेंगे, जिसमें इतनी जमीन पर मल्टी स्टोरी रेलवे अपनी आमदनी को बढ़ा सकती है, जिससे रेलवे अन्य कल्याणकारी योजनाएं चला सकती है, वरना वह जमीन कब्जा हो जाएगी, किसी दूसरे के हाथ में निकल जाएगी । उससे रेलवे को नुकसान हो सकता है। यहां तक कि मुम्बई की जो MUTP योजना है, जिसमें अब रेलवे लाइन चार से पांच छः तक हो जाएगी, वह भी इसी commercial योजना के तहत ली जाएगी और इससे मुम्बई के लोगों को काफी बड़ी राहत मिलेगी । मुम्बई में ऊपर से भी मेट्रो रेल बनाने की योजना है । ऊपर से एक ट्रेन चलेगी, जो मुम्बईवासियों को एक नए किस्म की राहत प्रदान करेगी ।

मान्यवर, इनकी जिस योजना से यूपीए सरकार का रेल मंत्रालय चल रहा है , अगले पांच साल में 2.5 लाख करोड़ रूपए रेलवे पर लगाने की तैयारी है । 1947 से आज तक 2.5 लाख करोड़ लगा है । और यह 2.5 लाख करोड़ सिर्फ इतनी अवधि में लगाने की योजना है। वह यह जताती है कि किस तरह से रेलवे की health, रेलवे की सेहत और रेलवे के स्वास्थ्य को दुरूस्त किया गया है ।

इसी के साथ, मैं अपनी कुछ शिकायतें और बातें भी रेल मंत्री जी के सामने रखूंगा । हमारे मित्र और पूर्व रेल मंत्री माधव राव सिंधिया जी ने शताब्दी ट्रेन शुरू की थी । उस ट्रेन से बहुत बड़ा लाभ ऐसे लोगों का मिला था, जो हवाई जहाज से यात्रा नहीं कर सकते थे और इमसें 400, 500, 600 किलोमीटर तक के शहर होते थे । यह बहुत fast ट्रेन थी । शुरू

होती थी और उसी destination पर जाकर रूकती थी, उसी गंतव्य पर रूकती थी । धीरे-धीरे हम सारे मित्रों के राजनीतिक दबाव और अन्य लोगों के राजनीतिक दबाव में आज शताब्दी जगह-जगह रूकती जा रही है । जिसकी जो constituency होती है, वह हर रेल मंत्री से अपनी जान-पहचान , अपने दबाव का इस्तेमाल करके शताब्दी ट्रेन को रूकवा लेता है । जो शताब्दी ट्रेन पहेल ढाई घंटे में जिस गंतव्य पर पहुंचती थी, आज उसे साढ़े तीन-चार घंटे लगने लगे हैं और उस शताब्दी ट्रेन का अर्थ समाप्त होता चला जा रहा है, मेरा मंत्रीजी से आग्रह है कि वे इस पर पुनर्विचार करें। ऐसे सारे प्रस्तावों पर पुनर्विचार करके जो बहुत जरूरी है, सिर्फ उसे रखें और बाकी रद्द कर दें । कई जगह तो मैंने देखा कि सिर्फ दो यात्री चढ़ते हैं और सिर्फ दो यात्री उतरते है । इसके बावजूद वहां शताब्दी ट्रेन किसी-न-किसी प्रभावशाली व्यक्ति की वजह से रूक गई । शताब्दी ट्रेन के schedule पर फिर से निगाह डालें और इसको review करें । हम सदन में यह मांग करते है कि वे उन स्टेशंस पर उसका रूकना बन्द करें ।

दूसरा, उन्होंने प्लेंटफॉर्म पर इस तरह से तमाम फास्ट फूड कॉर्नर और रेस्तंरा देने का निर्णय किया है, कई जगह आ भी रहे हैं, लेकिन अभी भी प्लेटफॉर्म पर जो वेंडर्स का खाना मिलता है, उसकी quality बहुत खराब हैं वह भले ही अपना पैसा बढ़ा लें, लेकिन ट्रेन रूकती है, लोग डिब्बे से हाथ बढ़ा कर उससे खाना ले लेते है, पूरी आलू, चाय, लेकिन जब ट्रेन आगे चली जाती है, उसको खाते-पीते हैं, तो उसकी quality इतनी खराब है, कि बाद में आदमी को पता चलता है, लेकिन यात्री आगे निकल जाता है इस वेंडर्स को सुधारवाने की कोशिश कीजिए, क्योंकि खाने की quality बहुत खराब है ।

तीसरी बात यह है ,जैसा सुषमा जी ने भी सुरक्षा की बात रखी है, मैं भी उस बात का समर्थन करता हूं । रेलवे के अन्दर सुरक्षा के प्रबंध और कड़े होने चाहिए । अभी कानपुर के एक बहुत मशहूर डाक्टर का लोगों ने एसी फर्स्ट क्लास में मर्डर कर दिया, उनके सारे पैसे ले लिए । कई जगह बिस्किट खिलाने वाले गिरोह चलते हैं । वे आपसे बात करने लगते हैं, । वे टाई, पैंर सूट में चलते हैं । आप समझते हैं कि बहुत बढ़िया साथ का आदमी है । वह बिस्किट का पैकेट निकालता है, एक खुद खाता है और कहता है कि भाई साहब, आप भी लीजिए । आपसे दोस्ती हो जाती है, आप खा लेते है, आप बेहोश हो जाते है, और वह आपका सामान लेकर चला जाता है दूसरा या चौथा बिस्किट जहरीला होता है । इसमें नींद की गोलियां होती है । ठीक वाला वह खाता जाता है और नशे वाला बिस्किट आप । इस तरह के गिरोहपर काबू पाने के लिए रेलवे के अंदर सुरक्षा के इन्तजाम और मजबूत करने चाहिए ।

मेरे ख्याल से जनरल क्लास के डिब्बे और बढ़ाने चाहिए, ऐसी हमारी उनसे मांग है । सब-अर्बन स्टेंशस पर ट्रेन रूकने की व्यवस्था होनी चाहिए । अभी जितनी ट्रेनें नई दिल्ली या पुरानी दिल्ली पर terminate होती हैं, अगर यही शताब्दी ट्रेन निजामुद्दीन पर रूक जाए, मैं उदाहरण के लिए बता रहा हूँ, तो साउथ दिल्ली का दिल्ली-आगरा ट्रैफिक, वहीं उतर जाएगा । इसलिए हर शहर में, जहां सब-अर्बन स्टेशन है, अगर वहां एक मिनट के लिए भी गाडी रोकें, जो सारा pressure मेन स्टेशन पर नहीं आता है । चाहे कोलकाता हो, चाहे मुम्बई हो , चाहे दिल्ली हो, चाहे मद्रास हो, इसे सारे शहरों में करना चाहिए। बड़े शहर के अन्दर अगर थोड़ी देर के लिए ट्रेन एक सब-अर्बन स्टेशन पर रूक जाए, तो उस प्लटेफॉर्म पर उस स्टेशन पर उसका आधा लोड कम जाएगा । और लालू जी का, गरीब रथों का एक ऐसा मॉडल है, जिसकी जितनी तारीफ की जाए, कम है । इस मॉडल को और बढ़ाना चाहिए एवं इसमें जितनी और ट्रेनें शुरू हों, बेहतर होगा । इससे आम आदमी को बहुत राहत मिलेगी, क्योंकि इसका किराया सस्ता है, वातानुकूलित सुविधा है और यह ट्रेन बहुत ही लोकप्रिय हो रही है, और इसलिए गरीब रथों की संख्या और बढ़नी चाहिए ।

मान्यवर, अहमदनगर बीड पारली कॉरिडोर का काम बहुत धीमा है । मेरा रेल मंत्री जी से अनुरोध है कि अगर अहमदनगर बीड पारली कॉरिडोर, महाराष्ट्र को नोटिस में लेकर इसे करें तो बहुत ही अच्छा रहेगा ।

एनडीए सरकार के जमाने में लोगों ने यह मांग की थी कि अगर सभी मंत्रालयों के तीन लोग रिटायर होते हैं, तो केवल एक पोस्ट भरी जाएं सुषमा जी आपत्ति कर रही थी, लेकिन नीतीश कुमार जी के जमाने में रेलवे में लाखों वेकेंसीजं खाली रखी गई, लेकिन लालू जी ने आते ही इसका विरोध किया और सारी बहाली शुरू की । एक ओर जहां वेंकेंसीज भरी गई, लोगों को ज्यादा नौकरियां मिलीं, उसके साथ-साथ रेल किराए भी

सस्ते हुए। आज वही रेलवे ? जो विश्व बैंक के आगे घुटने टेकती थी, जो बात-बात के लिए पैसा मांगती हुई घूमती थी, आज अपने आप में उस गुलामी से आजाद हो गई । आज रेलवे को 25,000 करोड़ रूपये से भी ज्यादा 69,000 करोड़ रूपये की आमदनी होने लगी। उसका प्रॉफिट इतना बढ़ गया है, लेकिन किराए नहीं बढ़ रहे हैं । इसके बाद भी अगर आलोचना होती है और विपक्ष आलोचना करता है, तो मुझे समझ में नहीं आता कि हमें क्या कहना चाहिए ?

मान्यवर, मैं यह विपक्ष से पूछना चाहता हूं, और इस बात का निर्णय सदन करे कि इन सबके बावजूद भी आलोचना की क्या गुंजाइश रह जाती है ? एक बार फिर से मैं इस रेल बजट का समर्थन करते हुए, लालू जी को धन्यवाद देते हुए, डा0 मनमोहन सिंह जी को धन्यवाद देते हुए, बैठना चाहता हूं ।

श्री वीरेन्द्र भाटिया (उत्तर प्रदेश) **:** उपसभाध्यक्ष जी, इस वर्ष का ....(**व्यवधान**) **लालू जी**, **दो मिनट** आप बैठ जाइए, मेरी भी सुन लीजिए क्योंकि बहुत दिनों बाद अवसर मिला है ।

मैंने रेल बजट का अध्ययन किया । अभी तक लोग लालू जी को मैंनेजमेंट गुरू के रूप में जानते थे, लेकिन मुझे एक अच्छी बात लगी कि आपने स्वयं स्वीकार किया कि आप सपने भी बेचते हैं और जादूगर भी हैं । मैं आपको सपने बेचने वाला नहीं, सपनों का सौदागर कहना चाहता हूं । मैं आपको जादूगर भी कहना चाहता हूं, लेकिन पहले एक शेर मैं सुना दूं, और यह बता दूं की सपनों और हकीकत में बड़ा फर्क होता हैं? लालू जी । सपने बेचना बहुत आसान होता है, लेकिन सपने साकार करना उतना ही मुश्किल होता है अभी हमारे बड़े भाई और कवि उदय प्रताप सिंह जी ने एक शेर सुनाया और कहा कि मैं आपको उसे सुना दूं, इसलिए मैं उस शेर से ही अपनी बात प्रारम्भ करता हूं **:**

कल्पना कभी साकार नहीं होती है ।
याचना कभी अधिकार नहीं होती है ।।
कटु सत्य सिंधु के भीषण तूफानों में ।
सपनों की नौका पार नहीं होती है।

जब मैंने लखनऊ विश्वविद्यालय में परीक्षा पास करने के बाद वकालत प्रारम्भ करने की सोची तो फौजीदारी के एक बहुत प्रसिद्ध वकील थे । मैं उनके पास गया । लखनऊ विश्वविद्यालय यूनियन का मैं मंत्री रहा । वैसे वह अपने पास कोई जूनियर नहीं रखते थे, उनका नाम था स्वर्गीय बाबू जगत भाई श्रीवास्तव । मैंने उनसे पूछा कि क्या मुझे आप अपना शिष्य बनाएंगे, तो उन्होंने बहुत देर सोचा और फिर उसके बाद बोले के तुम को शिष्य जरूर बनाऊंगा, क्योंकि तुम शब्दों के सौदागर हो । शब्दों के जादूगर हो । उस समय तो मैं कुछ नहीं बोला, लेकिन फिर उसके बाद उनसे पूछा कि इसका क्या तात्पर्य है। उन्होंने कहा, देखों, अच्छा वकील होने के लिए शब्दों का वाग्जाल बुनना बहुत आवश्यक है । मैं तुमको गुर बता रहा हूं कि जब जज के सामने बहस करना तो ऐसी कहानी गढ़ना कि उसको लगे कि जो कुछ तुम कह रहे हो, वह सच है । लेकिन एक बात का ध्यान जरूर रखना कि अगर तुमने बहुत सोचने का मौका दे दिया, तो तुम्हारे सारे तर्को की धज्जियां उड़ाने के लिए दूसरा पक्ष होगा और हकीकत कुछ और भी हो सकती है ।

तो लालू जी, सचमुच आप शब्दों के बाजीगर है । आपने स्वंय स्वीकार भी किया है । कि आप जादूगर है। लेकिन यह सही है ...(**व्यवधान**)...

श्री लालू प्रसाद : कहां बोला है ?...(**व्यवधान**)...

श्री वीरेन्द्र भाटिया : **आपने अपने ही उसमें कहा कि "मैं जादूगर हूं"** ...(**व्यवधान**)...

जादू-टोना नहीं, मैं जादूगर हूं । ...(**व्यवधान**)... अभी मैं आपका पढ़ दूं ? अभी मैं फिर से आपको रिमांइड कर दूं । आपने ही स्वीकार किया । ...(**व्यवधान**)...

श्री लालू प्रसाद : जादू-टोना बहुत देखा, अब इंद्रजाल देखिए । ...(**व्यवधान**)...

श्री वीरेन्द्र भाटिया : हाँ , "जादू और टोना हमने दिखाया था पिछले साल, इस बार पूरा इंद्रजाल देख लीजिए ।" जादू-टोना और इंद्रजाल थोड़ी देर के लिए बहुत अच्छा लगता है, लेकिन जब मस्तिष्क का इस्तेमाल कीजिए, तो लगता है कि यह क्या हुआ, यह तो कुछ हकीकत है ही नहीं । वैसे ही आपका बजट है शब्दों को पढ़िए, अखबारों को पढ़िए, तो लगता है कि ऐसा बजट हो ही नहीं सकता । जनता में लोकप्रिय बजट आपने दिया है, लेकिन जब हकीकत में जाइए, जब अध्ययन कीजिए तो मालूम होता है कि हकीकत क्या है । जो कुछ कहा है वह कब पूर्ण होगा ? आपने कहा कि आप सपने बेचतें हैं । सचमुच आप सपनों के सौदागर हैं। जब मैं विश्वविद्यालय-जीवन में था-अभी हेमा जी नहीं हैं-तो एक पिक्चर आई थी , जिसमें हेमा मालिनी जी से सबसे पहली बार एक्टिंग की थी, "सपनों का सौदागर" । वहीं से मैंने पिक्चर देखना प्रारम्भ किया ।

मैंने दस वर्ष पूर्व एक कहानी पढ़ी थी । वह मैग्जिन मुझे याद नहीं है । शायद कादम्बिनी या सरिता में पढ़ी थी । वह बिहार के एक गाँव की कहानी थी । एक व्यक्ति के पितामह स्वंतंत्रता संग्राम के सेनानी थे । वह एक बहुत सुदूर गाँव के रहने वाले थे । जब आजादी मिली तो उनको लगा कि मैंने स्वतंत्रता संग्राम लड़ा है – उस गाँव में न रोशनी थी, न सड़क थी और न स्कूल था। उनके मन में आशा की किरण जागी । वह सपना देखने लगे कि एक दिन आएगा । अब तो कभी-न-कभी रोशनी, सड़क और स्कूल, सब कुछ इस छोटे-से गाँव को मिलेगा । फिर उसके बाद एक चुनाव आया, दूसरा चुनाव आया, तीसरा चुनाव आया और "वह आएगी –वह आएगी" । कहते हुए उसके पितामह का देहान्त हो गया । उसके बाद उस प्रदेश में एक मुख्य मंत्री आया-नाम तो उसने नहीं बताया –जो अपने को जनता का मुख्य मंत्री कहता था, जो यह कहता था कि गरीब लोगों की आशा हूं, जो यह कहता था कि मैं तो चरवाहा हूं, चरा भी सकता हूं, जो कहता था कि मैं झोपंडी में रहता हूं, मुख्य मंत्री होने के बाद भी, जो यह कहता था कि मैं आज भी गायों और भैंस के बीच में रहता हूं और मैं जनता का मुख्य मंत्री हूं । उस पोते की फिर आशा जागी, जागृत हुई उसने कहा कि अब तो हमारा मुख्य मंत्री आया है, हमारे बीच का मुख्य मंत्री आया है और हमारे इस छोटे-से गाँव में भी फिर से खुशहाली आएगी ।....(**व्यवधान**)...

SHRI JANARDHANA POOJARY (karnataka): Sir, wheather it is related.

श्री वीरेन्द्र भाटिया : क्या आपको सुनने में भी एतराज है? उस कहानी में अगर होता तो मैं जरूर बता देता । ...(**व्यवधान**)...

SHRI JANARDHANAPOOJARY: We have been hearing this for the last ten minutes. Sir,we are also waiting to speak on the Rail Budget.

श्री वीरेन्द्र भाटिया : मैं बजट के बारे में ही बोल रहा हूं । आपने कहा है । आपको सुनने में कोई एतराज है? ...(**व्यवधान**)... आलोचना सुनना भी सीख लीजिए । ...(**व्यवधान**)... अगर आपकी समझ में नहीं आ रहा है, ...(**व्यवधान**)...

प्रो0 राम देव भंडारी : सर, ...(**व्यवधान**)... यह अपनी बाजीगरी शुरू कर दिए हैं । ...(**व्यवधान**)... अपनी बाजीगरी कर रहे हैं आप । ...(**व्यवधान**)...

श्री वीरेन्द्र भाटिया : मैं उसी पर आ रहा हूँ । ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो0 पी0 जे0कुरियन) : भाटिया जी ...(**व्यवधान**)...

श्री वीरेन्द्र भाटिया : अभी तो शुरूआत की है, तब पेरशानी हो रही है । अभी आगे बोलूंगा तो फिर बड़ी तकलीफ हो जाएगी ।

वहाँ मुख्य मंत्री आये और कहने लग गए । फिर आशा की किरण जागी । एक चुनाव आया । उन्होंने कहा कि इस चुनाव में मैं नहीं कर सका अगले चुनाव में जरूर मांग पूरी करूंगा । और दूसरा चुनाव भी आ गया, सत्ता परिवर्तन हो

गया, मुख्य मंत्री चला गया, लेकनि वह वैसे-के-वैसे ठगे रह गए । उनके सपने टूट गए । तो लालू जी, कहीं वही पुनरावृत्ति यहां भी फिर से न हो जाए । सपने दिखाना बहुत आसान है, लेकिन सपनों को हकीकत में बदलने का जब अवसर आता है तब बड़ी मुश्किलें और दुशवारियां होती हैं और आप तो 4 वर्ष से सपने दिखा रहे हैं । ऐसा न हो कि जो बिहार से हुआ था, वही यहां भी हो जाए । चुनाव के एक वर्ष बाद आप न हों और सब के सपने, सपने रह जाएं ।

प्रो0 रमा देव भंडारी : बिहार में क्या हुआ ?

श्री वीरेंन्द्र भाटिया : बिहार में सत्ता परिवर्तन हुआ और आप वहां से यहां चले गए ।

प्रो0 राम देव भंडारी : 15 वर्ष सत्ता में रहे । ...(**व्यवधान**)...

श्री वीरेंन्द्र भाटिया : यही तो मैं कह रहा हूं कि आप इतने वर्ष रहे, लेकिन परिवर्तन न कर सके । यही तो मैं कह रहा हूं । ...(**व्यवधान**)... **सुन लीजिए, आलोचना भी सुन लीजिए ।** ...(**व्यवधान**)...

प्रो0 राम देव भंडारी : कांग्रेस से समाजवादी पार्टी में आकर आपने क्या परिवर्तन किया ?

श्री वीरेन्द्र भाटिया : परितर्वन तो अब होगा । अब आप न रहेंगे, अब हम ही रहेंगे यहां पर । परिवर्तन तो होने ही वाला है । ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो0 पी0 जे0 कुरियन) : बोलिए, बोलिए ।

श्री वीरेन्द्र भाटिया : मैं सचमुच धन्यवाद देता हूं लालू जी को कि आपने कई अच्छे वायदे भी किए है, और बहुत लोक-लुभावन वायदे किए हैं लेकिन मैं फिर वही बात कह रहा हूं कि उन्हें सिर्फ सपनों तक सीमित मत रखिए । मैं आपको इसलिए कह रहा हूं कि उनको हकीकत में लाने की भी कोशिश कीजिए । और एक बात कहूंगा कि बजट देखकर ऐसा लगता है कि आप सारे देश के रेल मंत्री नहीं हैं । ...(**व्यवधान**)...

श्री लालू प्रसाद : कभी-कभी सपने में परी से भी भेंट होती है ।

श्री वीरेन्द्र भाटिया :वह तो आप के लिए होगा, हमें तो दूसरे लोगों से भेंट होती है । उसे देखकर ऐसा लगता है कि आप पूरे देश के नहीं केवल बिहार के रेल मंत्री हैं । आप जरा अपना बजट देख लीजिए । मैं आपसे कहना चाहूंगा, आपने 53 नई गाडियों में से 19 गाड़ियां बिहार को दी है ।

श्री लालू प्रसाद : आप यू0 पी0 का भी पढ़ लीजिए ।...(**व्यवधान**)...

श्री वीरेन्द्र भाटिया : आप मुझे बोलने भी नहीं देंगे ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (Prof.P.J.KURIEN):Mr.Rajeev shukla ,you when your seat,...(Interruptions)...Mr. Shukla, Mr. Pany, please take your ,...(Interruptions)...No,so do not disturb,...(Interruptions)...Mr. Bhatia,do not reply to them, **भाटिया जी, आप** चैयर को address करो । Don't look at them Don't reply आपका टाइम सिर्फ 30 मिनट है । अरे, डिस्टर्ब मत करिए । बोलिए, बोलिए ।

श्री वीरेन्द्र भाटिया : सर, एक नया वैंगन कंस्ट्रक्शन यूनिट छपरा में लगाया जाएगा, मॉडर्नाइजेशन और डवलपमेंट की वर्कशॉप वहां लगाई जाएगी, मकोमा और मुजफ्फरपुर की बीमार फैक्टरी का अधिग्रहरण किया गया है, नबीनगर –औरंगाबाद जिले में एक हजार एम0डबल्यू0 थर्मल पावर प्लांट लगाया जा रहा है । हमें इसमें कोई एतराज नहीं है । कि आपका घर चमचमाए, मगर इस गरीब के घर में भी दिया जलाएं, हमारी आरजू यही है । आपने हमारे उत्तर प्रदेश की तरफ भी नजरे इनायत कर ली होती । ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो0 पी0 जे0 कुरियन) : भाटिया जी, चैयर को एड्रेस करो Don't address them. You address the Chair. Don't looke at them . You look at the Chair only.

श्री वीरेन्द्र भाटिया : मैं तो आपको एड्रेस कर रहा हूं ।

उपसभाध्यक्ष (प्रो0 पी0 जे0 कुरियन) : बोलिए बोलिए ।

श्री वीरेन्द्र भाटिया : हमने आपसे कहा लालू जी, हमें कोई एतराज नहीं कि आप वहां अपने मकान में रोशनी कर दें, लेकिन एक दिया उत्तर प्रदेश की तरफ भी दिखा देते । एक बात याद रखिए पटना से गाड़ी दिल्ली के लिए वाया लखनऊ ही आती है और हम आपकी गाड़ी रोकने के लिए सक्षम है । आपको दिल्ली आने के लिए वाया लखनऊ ही आना पड़ेगा । मैंने पिछली बार अपने भाषण में आपसे दो बातें कही थी । ...(**व्यवधान**)...

श्री लालू प्रसाद : वहां लिखा रहता था । ...(**व्यवधान**)... लखनऊ में, क्या आप वहीं भाटिया जी हैं ?

श्री वीरेन्द्र भाटिया : अब आप देख लीजिएगा, कौन से भाटिया जी हैं ? ...(**व्यवधान**)... **एक बात हमने** आपसे पिछली बार कही थी । ...(**व्यवधान**)...

श्री नन्द किशोर यादव (उत्तर प्रदेश) : सर, मंत्री जी बार-बार डिस्टर्ब कर रहे हैं ।

श्री वीरेन्द्र भाटिया : कम सेकम हमें इस लायक तो समझा कि मंत्री जी डिस्टर्ब कर रहे हैं ।

श्री लालू प्रसाद : हम इन्हीं का भाषण सुनने के लिए रूके हैं ।

उपसभाध्यक्ष (प्रो0 पी0 जे0 कुरियन) : भाटिया जी, आप बोलिए ।

श्री वीरेन्द्र भाटिया : उपसभाध्यक्ष जी, मंत्री जी से मैंने पिछली बार जो आग्रह किया था, उसमें आपने एक आग्रह तो स्वीकार किया है, इलेक्ट्रिक स्टेयर्स का, उसके लिए मैं आपको बधाई देता हूं । मैंने आपसे आग्रह किय था कि उत्तर प्रदेश से जम्मू मैं वैष्णों देवी का बहुत बड़ा तीर्थ-स्थल है, वहां बहुत यात्री जाते हैं, जिसके लिए आप कोई डायरेक्ट गाड़ी लखनऊ से और कानपुर से दें । श्री श्रीप्रकाश जी बैठे हैं, कानपुर वालों की भी यह मांग है कि लखनऊ और कानपुर, दोनों जगह से ट्रेन चले, श्रीप्रकाश जी, आप भी सुन लीजिए, मैं आपकी ही बात कर रहा हूं, कानुपर से कोई गाडी वैष्णों देवी, जम्मू के लिए डायरेक्ट जानी चाहिए ।

श्री राजीव शुक्ल : वैष्णों देवी के लिए कोई गाड़ी नहीं चलती ।

श्री वीरेन्द्र भाटिया : वैष्णों देवी तक नहीं चलती , मुझे भी मालूम है, इतना ज्ञान है ।

गृह मंत्रालय भाटिया : वैष्णों देवी तक नहीं चलती, मुझे भी मालूम है, इतना ज्ञान है ।

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री श्रीप्रकाश जायसवाल) : लालू जी से हम मांग कर चुके हैं । ...(**व्यवधान**).... **लालू** जी से अगर छोटे भाई ने मांग कर ली है, तो लालू जी उसको निराश नहीं करते ।

श्री वीरेन्द्र भाटिया : चलिए, आपको अग्रिम बधाई । ...(**व्यवधान**)....

श्री कलराज मिश्र (उत्तर प्रदेश) : जायसवाल जी आपकी मांग पर जोर दे रहे हैं । ...(**व्यवधान**)....

श्री वीरेन्द्र भाटिया : कानुपर से मुरादाबाद के लिए कोई गाड़ी नहीं चल रही , कृपया वह भी दे दें । मैं कानपुर की बात कर रहा हूं, इसलिए कि श्री श्रीप्रकाश जी आपके पीछे बैठे है । यह हमको समर्थन देंगे ।

THE VICE-CHAIRMAN (Prof.P.J.KURIEN): Mr. Bhatia, beware of your time.

SHRI VIRENDRA BHATIA: I am coming to the points.लखनऊ इतना महत्वपूर्ण स्टेशन है और आपने लखनऊ स्टेशन के सौन्दर्यीकरण की, अपग्रेड करने की बात नहीं कही । आपने कहा कि विश्व-स्तरीय और स्टेशन बनेंगे, लेकिन लखनऊ की ओर आपकी निगाह नहीं गई । पांच स्टेशन आपने कहे और इन पांच स्टेशनों मं लखनऊ का नाम नहीं है । मैंने इसीलिए आपको याद दिलाया कि पटना से गाड़ी लखनऊ होकर ही जाती हैं । लखनऊ से एक गाड़ी अजमेर और जयपुर के लिए हमने आपसे अनुरोध किया था कि जयपुर राजस्थान की राजधानी है, वहां के लिए भी आप एक गाड़ी दे दीजिए । ...(**व्यवधान**).... **चलिए, अगर अब हैं तो मैं यह मान लेता हूं** और उसके लिए आपको धन्यवाद भी देता हूं, मगर यह बजट में नहीं है ।

उपसभाध्यक्ष जी, अब मैं कुछ बात बजट के बारे में करना चाहता हूं । आपने इसमें सुरक्षा के बारे में कहा, मैं एक बात

न कहीं जाए रेलवे अधिकारियों के द्वारा तो जो दंड आप देंगे, मैं उसे स्वीकार करूंगा ।

श्री लालू प्रसाद : बिहार में उन्हें कोई बांधकर रख लेता है?

श्री वीरेन्द्र भाटिया : मुझे क्या मालूम, आप अपने अधिकारियों से पूछिए ।

मैं आपको बधाई देना चहाता हूं कि आपने महिलाओं को सिपाहियों की भर्ती में और उप निरीक्षिण की भती में आरक्षण दिया । यह एक अच्छा और क्रान्तिकारी कदम है, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन इसी प्रकार रेलवे की अन्य नौकरियों में भी महिलाओं को आरक्षण दीजिए और आरक्षण का प्रतिशत, जैसा अभी श्रीमती सुषमा जी ने कहा, भी बढ़ाइए, यह मेरा आग्रह है आपसे । आपने कहा कि आजकल टेलीफोन इंक्वायरी बहुत जल्दी मिलती है, बहुत जल्दी मालूम हो जाता है कि ट्रेन लेट हो रही है, मेरा इस पर थोडा सा विरोध है । आधे घंटे, पौने घंटे तक नंबर नहीं मिलते हैं , नंबरों की कमी हो, तो कृपया टेलीफोन कनेक्शन और बढ़ा दीजिए ...(**व्यवधान**).... मैं 193 की बात रह हूं । आपके ये फोन अक्सर खराब रहते हैं ...(**व्यवधान**).... **हम** अपने लखनऊ स्टेशन की बात कर रहे हैं ।

मैं आपको एक सुझव देना चाहता हूं कि जिस प्रकार बड़े शहरों में, रेलवे स्टेशनों के अलावा भी बोर्ड लगा दिए जाएं जिससे देर से आने वाली ट्रेनों के बारे में सूचना मिल जाए, तो इससे जनता को सुविधा होगी । अगर ऐसे display board आप दो-तीन जगहों पर लगा देंगे, तो इससे जनता को सुविधा होगी । हम घर से निकले, हजरतंगज पहुंचे, हमने देखा कि ट्रेन लेट है, तो हम वापस चले गए ।

आपने कर्मचारी कल्याण की बात की है । मैं आपसे कहना चाहता हूं कि कर्मचारी कल्याण में कर्मचारियों की सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि उनका जब ट्रांसफर होता है, तो उनके रहने की व्यवस्था नहीं हो पाती, उनके लिए क्वार्टर्स नहीं हैं । इस बारे में आपने अपने रेल बजट में कुछ नहीं कहा है । कृपया, कर्मचारियों की सबसे बड़ी परेशानी यानी ट्रांसफर होने पर रहने की व्यवस्था की समस्या की ओर ध्यान दीजिए ।

मैं अंतिम बात कहते हुए अपनी बात समाप्त करूंगा कि सफाई की ओर विशेष ध्यान दिए जाए । मैं आपको दो घटनाएं बता रहा हूं, अन्यथा न लीजिएगा । मैं 21 फरवरी को लखनऊ से आगरा जा रहा था । जो ट्रेन थी, उसके डिब्बे पर यह भी नहीं नहीं लिखा हुआ था कि यह A.C. II Tier हैं । ट्रेन का नंबर दूसरा लिखा हुआ था – पटना-लखनऊ-मथुरा एक्सप्रेस, जब कि वह उस दिन लखनऊ से चल रही थी । यह तो खैर छोटी बात है, सबसे बड़ी बात है कि जो बिस्तर मिला, शायद कोई भी साधारण व्यक्ति उसका प्रयोग करना पसंद न करे । यही स्थिति वापसी में भी हुई । उसीदिन रात को मैं वापस आया और यही स्थिति हुई, जब मैंने कहा कि मैं सांसद हूं,तो बड़ी मुश्किल से उसने सबसे अच्छा बिस्तर ढूंढकर मुझे दिया, वह भी ऐसा था कि मुझे कहना पडा कि मैं अपना शाल बिछा लूंगा और इसी से काम चला लूंगा । यह केवल मेरी शिकायत नहीं थी, डिब्बे मेंबैठे हर व्यक्ति ने यही शिकायत की और आपको शायद बुरा लगे, उसका जवाब यह था कि मैं क्या करूं, ठेकेदार जैसा बिस्तर मुझेदेता है, मैं आपको वही दे रहा हूं । जब मैंने कंडक्टर से शिकायत की, तो उसने कहा कि यह मेरा अधिकार क्षेत्र नहीं है, अब यह व्यवस्था ठेकेदारों को दे दी गई है ।यह तो छोटी ट्रेन थी , उसका यह हाल था । अभी मैं श्री अमर सिंह जी के पिता के देहांत के मौके पर आजमगढ़ गया था, वहां भी यही स्थिति मैंने देखी । मुझे बाथरूम के बगल में कूपा मिल गया, तो इतनी दुर्गंध आ रही थी और जब मैंने कंडक्टर से कहा कि सफाई क्यों नहीं हुई, तो उसने कहा कि यह मेरा उत्तदायित्व नहीं है । जो आदमी वहां पर बिस्तर दे रहा था, जब मैंने उससे कहा कि बिस्तर गंदा है , तो उसने कहा कि मैं क्या करूं, मुझको जो मिल रहा है, मैं तो वही दूंगा और जब बाथरूम, में सफाई की बात कही गई, तो उसने कहा कि यह मेरा उत्तरादायित्व नहीं है, हम तो ठेकेदार के आदमी है, हमारा काम सिर्फ यहां पर सबको बिस्तर देने का है। अगर कंडक्टर यह कहता है कि सफाई की व्यवस्था उसका उत्तदायित्व नहीं है, अटेंडेंट अब वहां पर नहीं है, होगा, तो मिलता नहीं है, बिस्तर देने वाला यह कहता है कि हमारा काम सिर्फ बिस्तर देना है, वह भी ऐसे बिस्तर , जो प्रयोग नहीं किए जा सकते । यह बिस्तर ठेकेदार देता है । किसी की तो सिर्फ बिस्तर देना है, वह भी ऐसे बिस्तर, जो प्रयोग नहीं किए जा सकते । यह बिस्तर ठेकेदार देता है । किसी की तो responsibility फिक्स होनी चाहिए । आज मैं आपको बधाई देता हूं कि हमारी रेलवे में चूहें मिलते हैं, हमारी रेलवे में कॉकरोच मिलते हैं, इसके लिए सचमुच आप बधाई के पात्र है । अखबारों में निकल रहा है कि रेलवे में चूहे मिल रहे हैं । गाड़ी में कॉकरोच तो आप कभी भी देख लीजिए । अपने सैलून से निकलकर उसमें भी यात्रा करने की कोशिश कीजिए, आम लोगों की बात जानने की कोशिश कीजिए । कछ से अलग हटकर, कुछ कटु बात सुनने की कोशिश

न कही जाए रेलवे अधिकारियों के द्वारा तो जो दंड आप देंगे, मैं उसे स्वीकार करूंगा।

श्री लालू प्रसाद: बिहार में उन्हें कोई बांधकर रख लेता है?

श्री वीरेन्द्र भाटिया: मुझे क्या मालूम, आप अपने अधिकारियों से पूछिए।

मैं आपको बधाई देना चाहता हूं कि आपने महिलाओं को सिपाहियों की भर्ती में और उप निरीक्षक की भर्ती में आरक्षण दिया। यह एक अच्छा और क्रान्तिकारी कदम है, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन इसी प्रकार रेलवे की अन्य नौकरियों में भी महिलाओं को आरक्षण दीजिए और आरक्षण का प्रतिशत, जैसा अभी श्रीमती सुषमा जी ने कहा, भी बढ़ाइए, यह मेरा आग्रह है आपसे। आपने कहा कि आजकल टेलीफोन इंक्वायरी बहुत जल्दी मिलती है, बहुत जल्दी मालूम हो जाता है कि ट्रेन लेट हो रही है, मेरा इस पर थोड़ा सा विरोध है। आधे घंटे, पौने घंटे तक नंबर नहीं मिलते हैं, नंबरों की कमी हो, तो कृपया टेलीफोन कनेक्शन और बढ़ा दीजिए ... (व्यवधान).... मैं 193 की बात कर रहा हूं। आपके ये फोन अक्सर खराब रहते हैं ... (व्यवधान)... हम अपने लखनऊ स्टेशन की बात कर रहे हैं।

मैं आपको एक सुझाव देना चाहता हूं कि जिस प्रकार बड़े शहरों में, रेलवे स्टेशनों के अलावा भी बोर्ड लगा दिए जाएं जिससे देर से आने वाली ट्रेनों के बारे में सूचना मिल जाए, तो इससे जनता को सुविधा होगी। अगर ऐसे display board आप दो-तीन जगहों पर लगा देंगे, तो इससे जनता को सुविधा होगी। हम घर से निकले, हजरतगंज पहुंचे, हमने देखा कि ट्रेन लेट है, तो हम वापस चले गए।

आपने कर्मचारी कल्याण की बात की है। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि कर्मचारी कल्याण में कर्मचारियों की सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि उनका जब ट्रांसफर होता है, तो उनके रहने की व्यवस्था नहीं हो पाती, उनके लिए क्वार्टर्स नहीं हैं। इस बारे में आपने अपने रेल बजट में कुछ नहीं कहा है। कृपया, कर्मचारियों की सबसे बड़ी परेशानी यानी ट्रांसफर होने पर रहने की व्यवस्था की समस्या की ओर ध्यान दीजिए।

मैं अंतिम बात कहते हुए अपनी बात समाप्त करूंगा कि सफाई की ओर विशेष ध्यान दिया जाए। मैं आपको दो घटनाएं बता रहा हूं, अन्यथा न लीजिएगा। मैं 21 फरवरी को लखनऊ से आगरा जा रहा था। जो ट्रेन थी, उसके डिब्बे पर यह भी नहीं नहीं लिखा हुआ था कि यह A.C. II Tier है। ट्रेन का नंबर दूसरा लिखा हुआ था-पटना-लखनऊ-मथुरा एक्सप्रेस, जब कि वह उस दिन लखनऊ से चल रही थी। यह तो खैर छोटी बात है, सबसे बड़ी बात है कि जो बिस्तर मिला, शायद कोई भी साधारण व्यक्ति उसका प्रयोग करना पसंद न करे। यही स्थिति वापसी में भी हुई। उसी दिन रात को मैं वापस आया और यही स्थिति हुई, जब मैंने उससे कहा कि मैं सांसद हूं, तो बड़ी मुश्किल से उसने सबसे अच्छा बिस्तर ढूंढकर मुझे दिया, वह भी ऐसा था कि मुझे कहना पड़ा कि मैं अपना शाल बिछा लूंगा और इसी से काम चला लूंगा। यह केवल मेरी शिकायत नहीं थी, डिब्बे में बैठे हर व्यक्ति ने यही शिकायत की और आपको शायद बुरा लगे, उसका जवाब यह था कि मैं क्या करूं, ठेकेदार जैसा बिस्तर मुझे देता है, मैं आपको वही दे रहा हूं। जब मैंने कंडक्टर से शिकायत की, तो उसने कहा कि यह मेरा अधिकार क्षेत्र नहीं है, अब यह व्यवस्था ठेकेदारों को दे दी गई है। यह तो छोटी ट्रेन थी, उसका यह हाल था। अभी मैं श्री अमर सिंह जी के पिता के देहांत के मौके पर आज़मगढ गया था, वहां भी यही स्थिति मैंने देखी। मुझे बाथरूम के बगल में कूपा मिल गया, तो इतनी दुर्गंध आ रही थी और जब मैंने कंडक्टर से कहा कि सफाई क्यों नहीं हुई, तो उसने कहा कि यह मेरा उत्तदायित्व नहीं है। जो आदमी वहां पर बिस्तर दे रहा था, जब मैंने उससे कहा कि बिस्तर गंदा है, तो उसने कहा कि मैं क्या करूं, मुझको जो मिल रहा है, मैं तो वही दूंगा और जब बाथरूम में सफाई की बात कही गई, तो उसने कहा कि यह मेरा उत्तरदायित्व नहीं है, हम तो ठेकेदार के आदमी हैं, हमारा काम सिर्फ यहां पर सबको बिस्तर देने का है। अगर कंडक्टर यह कहता है कि सफाई की व्यवस्था उसका उत्तरदायित्व नहीं है, अटेंडेंट अब वहां पर नहीं है, होगा, तो मिलता नहीं है, बिस्तर देने वाला यह कहता है कि हमारा काम सिर्फ बिस्तर देना है, वह भी ऐसे बिस्तर, जो प्रयोग नहीं किए जा सकते। यह बिस्तर ठेकेदार देता है। किसी की तो rcsponsibility फिक्स होनी चाहिए। आज मैं आपको बधाई देता हूं कि हमारी रेलवे में चूहे मिलते हैं, हमारी रेलवे में कॉकरोच मिलते हैं, इसके लिए सचमुच आप बधाई के पात्र हैं। अखबारों में निकल रहा है कि रेलवे में चूहे मिल रहे हैं। गाड़ी में कॉकरोच तो आप कभी भी देख लीजिए। अपने सैलून से निकलकर उसमें भी यात्रा करने की कोशिश कीजिए, आम लोगों की बात जानने की कोशिश कीजिए। कुछ* से अलग हटकर, कुछ कटु बात सुनने की कोशिश

कीजिए, क्योंकि वह आपको सही बात नहीं बताते हैं। हम आपको सही बात बताना चाहते हैं। ये नहीं बताएंगे । लालू जी, हम तो हमेशा कहेंगे कि "निन्दक नियरे राखिए" । आपने अब तक बहुत तरक्की की है । , अगर सही बात जानिएगा तो आप और आगे तरक्की कीजिएगा । हम तो यही चाहेंगे कि आप और आगे बढें। आपको जब "मैनेजमेंट गुरू" का खिताब मिलता है और आपको विदेशों में आंमत्रित किया जाता है तो हमें भी गर्व होता है कि हमारे रेल मंत्री को विदेशों के लोग आमंत्रियों करते हैं । लेकिन कहीं ऐसा न हो कि वह सिर्फ दिखावा ही रह जाए । अंत में मैं सिर्फ यही कहता हूं कि हम विद्यार्थी जीवन में नीरज की एक कविता गाया करते थे "स्वप्न झडें फूल से, लुट गए श्रृंगार सभी, कारवां गुजर गया और हम गुबार देखते रहे" कहीं यही न हो जाए । धन्यवाद ।

SHRI PENUMALLI MADHU (Andhra Pradesh): Sir, the hon. Railway Minister, while presenting the Railway Budget for 2008-09, has made an announcement of a staggering surplus amounting to Rs. 25,000 crores. Sir, in this Budget, earnings from tariff have shown a double digit growth. The focus is on increasing yields, rather than increasing fariff per ton of freight. Overloading of wagons inevitably leads to higher maintenance cost; they result in safety problems as well. The financial figures given by the Railway Minister look very healthy, but are these being achieved by jeopardising the future of the Railways?

On business development, as never before, formation of a strategic business unit within the organisation that would deal with the crucial bulk movement business is advocated. All these years, the Railways lost a good part of the freight tariff including bulk movement to the road network. Here, I would like to draw his attention to one aspect. If we see the growth pattern in the rail and road transport, it is alarming. At the time of Independence, in 1951, our railway transport was 80 per cent and the road transport was 20 per cert.The road transport that was 20 per cent, now, it is almost reversed. Today, if we see the growth trend in freight, the Railways' share has come down to 35 per cent. It indicates that the share of the road sector, which was 20 per cent during 1951, has increased to 65 per cent. Now, the road sector's share is 65 per cent and the Railways' share is 35 per cent. Sir, if we see the trend in cargo loaded, we find that it has increased. Sir, during all this period, it has increased by 9.1 times. There is 4.5 times increment in passenger transport. Sir, the road transport has increased !m,uch more. The cargo carried by the road sector has increased by 67.6 times; passenger transport is ...*(Interruptions)*...

श्री रूद्रनारायण पाणि (उडीसा) : सर, एक भी कैबिनेट मंत्री नहीं है । ...(व्यवधान).... **सर, राज्य** मंत्री तो हैं, लेकिन कैबिनेट मंत्री नहीं है ।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): There is the Minister of State for Railways. ....*(Interruptions)*.... you are unnecessarily raising this issue ..... *(Interruptions)*... The MoS is here. ...*(Interruptions)*...

श्री रूद्रनारायण पाणि : सर, यह व्यवस्था का प्रश्न है । ...(**व्यवधान**).... ठीक है सर, कैबिनेट मंत्री आ गए हैं ।THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): No, no; there is nothing like that. Take your seat...*(Interruptions)* ...The Minister of State for Railways is here. That is enough... *(Interruptions)*...

SHRI PENUMALLI MADHU: Sir, during the last three years, if we properly analyses the performance of the Railways and the road sector with respect to cargo and passenger transport, we will find that the performance of the road sector has increased many times. The road sector's share has increased by so many times, whereas the Railways share has not increased to that extent. The Railways' cargo share has increased by 9.1 times and the

*Expunged as orderliy the Chair

passenger share has increased by 4.5 times. The cargo carried by the road sector has increased by 67.6 times and the road sector passenger share has increased by 101 times.

Sir, when the hon. Railway Minister was presenting the Budget in the other House, there was a huge protest from every *quarter....(Interruptions)...* Sir, when our Railway Minister was presenting the Budget in the other House, I myself witnessed irrespective of their support to this Government, were protesting for some of the projects which were neglected in this Budget...*(Interruptions)...* Sir, I am getting disturbed. Sir when people start speaking to you, I am unable to *speak...(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): I am listening. Anyhow, it is being recorded also. Please proceed.

SHRI PENUMALLI MADHU: Sir, what was the motive of the Railway Minister when he presented the Railway Budget? What were the points then raised by different political parties? They were expecting announcement of many more projects, by the Minister it has not taken place. Starting from Congress party, the CPI (M), and to all other parties, all protested.

Why has it happened—the huge gap between the requirements of the future and the requirements of the existing network. In the rail network, in new projects, in new trains, in doubling and on suburban network on all these issues, there was a big demand raised by Members of Parliament. I would like to draw your attention to the growing economy. But, the railway network is not growing in meeting the requirements of the growing economy. Sir, while the increase in GDP and population is 12 times and 3.1 times respectively, the railway network increased by only 1.2 times. Since the railway network is not increasing, it is not meeting the requirements of the freight and of the passengers. The railway network is not meeting the requirements of the freight movement also. During the period from 1951 to 2002, the road network expanded by 8 times while the railway network is only 1.2 times.

The requirement is more, but the Railways is unable to meet the requirements of the people, Sir, I am not against any increase in the road network. But, the Planning Commission discussed about the railway network, its functioning, freight, passenger traffic and everything else concerning the railways. In their recommendation, in 1980, the Planning Commission advised the Railways to increase the rail transport to 72 per cent by 2000. They also suggested that the share of freight movement by road should be at 30-35 per cent. But, in spite of this recommendation—since 1985-onwards, now we are in 2008—there is no substantial increase as far as the railway transport and network is concerned. This is the biggest problem we are facing now.

Sir, I have already mentioned about the growth of population and the railway network. When the population is growing, when the economy is growing the railway network is not growing commensurately with the pace of the economy. This is one of the biggest problems that the entire transport sector is facing. The budgetary support to Railways is being reduced. If we see, up to Fifth Plan, the share of Railways was 7.9 per cent. In the Ninth Plan it was reduced to 5.6 per cent and in the Tenth Plan it was reduced to 4 per cent. So, Plan after Plan the budgetary support for Railways has gone down. This is the biggest problem that we are facing now. Sir, because of this situation the people of India and the economy are facing. a peculiar problem. Sir, urban population during this period has grown by 4.6 times and urban travel has increased by 6.9 times. Sir, Mumbai, Kolkata, Chennai, Delhi, and all such areas we are unable to meet the need of urban transport. The percentage of share of movement of

urban commuters has reduced drastically. Sir in 1986 the Railways decided not to participate further in the movement of urban commuters. This has further aggravated the situation. Sir, the situation is very alarming. When urban commuter growth is taking place in such an alarming way, the Railways in this Budget have not totally attended to this problem of the urban commuters.

I would like to mention another important things that are mentioned in this Budget. The most dangerous thing in this Budget, which is to be opposed tooth and nail, is the privatisation. In a big way, the Railways are intending to privatise. It is not only in the normal operations but in safety operations also the proposals of privatisation are being given. Sir, railway production units, manufacturing electric units, diesel locos, coaches, wheel, axle workshops, and in all such areas privatisation is being mooted. Sir, privatisation of maintenance workshops is being mooted. Sir, It is not only proposed but in Secunderabad *(Time-bell)* Division, two workshops with 805 workers were going to be closed at the end of this month on 31 st March. Signalling and Communication workshops are being closed. Printing presses are to be sold. Printing of tickets, money receipts, valuable documents, all forms and books, which are meant for the Railways use, are going to be privatised. Sale of all Railways; quarters is proposed. *(Time-bell)* Sir, Rs. 20,000 crores or more could be earned out of this sale which is being proposed. Sir, maintenance of station sanitation, railway tracks, railway buildings, electrical equipments, wagon cleaning, water supply, and all such operations are going to be privatised.Commercial activities like catering services are already privatised. Goods booking, parcel booking *(Time-bell)* Sir, I will take five more minutes.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): No, no, listen, Mr. Madhu.

SHRI PENUMALLI MADHU: Computer reservation, privatisation of railway hospitals is proposed. Even Railways hospitals are put on sale.

THE VICE- CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Please listen to me also. Your party has only 42 minutes. You have already taken 28 minutes. So please conclude and there are two more speakers.

SHRI PENUMALLI MADHU: No, no I have not taken 28 minutes.

I was supposed to speak for 15 minutes.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF P.J. KURIEN): You were supposed to speak for 15 minutes and you have taken 19 minutes. So, please wind up.

SHRI PENUMALLI MADHU: Privatisation of schools and colleges is very dangerous. In the coming days, they are going to cancel all types of concessions. Even concessions given to season ticket-holders are going to be stopped. *(Time-bell)* It is very dangerous.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): There are two more speakers from your party. Please stop. *(Time-bell)* I will given you only one minute.

SHRI PENUMALLI MADHU: Sir, in the State of Andhra Pradesh, the most important railway line proposed is from Kovvur to Bhadrachallam, and another is in one of the most backward areas where a proposed line is there from Pedda Palli Kareemnagar to Nizamabad., These important lines, even the Yerragintla-Nadyal lines, even the Gadwal-Raichur line, all these lines are for years pending. Nothing has been announced. Sir, from Kurnool to Hyderabad, they asked for an inter-city express. That is also not given. The entire Andhra Pradesh, irresoective of political parties, all MPs last year pleaded with the Minister that our

State is neglected. This should not happen.

THE VICE- CHAIRMAN: (PROF. P.J. KURIEN): Okay, now Mr. Sanjay Raut *(Time-bell)*

No, please sit down. No, no please...

SHRI PENUMALLI MADHU: Sir, in Kazipet Railway authorities *(Time-bell).* ..transferred Pilots and Guards to Secundrabad and Vijayawada which is very dangerous making Khazipet unimportance. My submission...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): That is okay. Now, you stop. Nothing. It will not go on record.

-SHRI PENUMALLI MADHU: My submission to the Railway Minister is, at least something should be done to the State of Andhra Pradesh. Kowur-Bhadrachallam line and Intercity Express from Kurnool to Hyderabad are most important. Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Sanjay Raut, you have requested for two minutes. But you have taken three minutes and after that Shri Gandhi Azad will speak.

श्री संजय राउत (महाराष्ट्र) **:** सर, यह जो रेल बजट आया है, इसने आम लोगों को जरूर खुशी दी है, फिर भी चुनौतियां कम नहीं हुइ है । मैं आपके माध्यम से इस रेल बजट के बारे में दो महत्वपूर्ण बातें रखना चाहता हूं । निश्चित रूप से यह पॉपुलर बजट है, लेकिन इसके ऊपर आगे क्या अमल होगा, यह कोई नहीं कह सकता । देखने, सुनने और पढ़ने में यह बजट बहुत अच्छा है, लेकिन एक्सपट्र्स तो कहते हैं कि यह रेल मंत्रालय का भूल-भुल्लैया है, इसमें कुछ पॉजिटिव एंगल जरूर है, पहली बात तो यह है कि इसमें 11वीं पंचवर्षीय योजना के लिए तय किए गए लक्ष्यों की झलक मिलती है और 11वीं पंचवर्षीय योजना के मसौदे की स्वीकृति के बाद, सरकार का यह पहला रेल बजट है । दूसरी बात यह है कि लोक सभा के चुनाव एकदम नजदीक हैं और यूपीए की सरकार का यह आखिरी बजट है । इसलिए सरकार की पूरी कोशिश है कि इसका अधिकतम लाभ लिया जाए । इन्हीं पहलुओं को ध्यान में रखकर रेल बजट का मूल्यांकन होना चाहिए ।

दूसरा मुद्दा यह है कि इस बजट में लालू जी ने हर वर्ग को खुले हाथों रेवडी बांटने की कोशिश की है, लेकिन यह ऐसा रेल बजट है जो बदकिस्मती से रेलवे को कोई तोहफा नहीं दे रहा है । इस बजट से इंडियन रेलवे को क्या मिला है, यह कोई नहीं बता सकता है। यह बात सही है कि किराए जरूर कम हुए हैं लेकिन जनरल क्लास में कोई किराया कम नहीं हुआ है। दूसरे क्लास में जो कमी हुई है, उसके पीछे भी दरियादिली का जो दिखावा किया जा रहा है वह ठीक नहीं है । दूसरे क्लास में रेलवे के रेट इतने ज्यादा हैं कि उसे अपनी ऑक्युपेंसी बढ़ाने के लिए किराए घटाने ही होंगे। लेकिन बजट में किराया घटा दिए जाने का मतलब यह नहीं है कि रेल मंत्री किसी दूसरे तरीके से आपकी जेब क में हाथ नहीं डालेंगे । ऐसे तरीके बाद में आजमाए जाते हैं । पिछली बार रिटर्न रिजर्वेशन पर पंद्रह सौ रूपए का जो बोझ लादा गया था, वह इस बार वापस नहीं लिया गया है । एक बार फिर नई गाड़ियों और दूसरी योजनाओं का ऐलान किया है, लेकिन इससे बैक लॉग बढ़ता जाएगा । यह तभी खत्म होगा, जब इन्फास्ट्रक्चर उसके काबिल हो । डेडिकेटिड फ्रेट कॉरीडोर की बात कही है, जबकि हमें एक ठोस प्लान और डेड लाइन की जरूरत है । यह नहीं बताई गइ है । रेलवे मंत्री ने विजन 2025 की बात कही है, लेकिन मुझे संदेह है कि इससे रेलवे की दशा और दिशा में कोई बदलाव आएगा । कमी बहुत सी है अगर आज इस विजन के साथ हम काम करें तो रेलवे की बीमारियों का इलाज हो सकता है । लालू जी ने एक बार फिर सरप्लस का ढिंढोरा पीटा है, लेकिन इसमें बकाया फंड का भी हिस्सा होता है, यह भी ध्यान रखना चाहिए । लालू जी ने एक बार फिर सरप्लस का ढिंढोरा पीटा है, लेकिन इसमें बकाया फंड का भी हिस्सा होता है, यह भी ध्यान रखना चाहिए । इममें लालू जी की प्रसिद्ध एकाउंटिंग कलाकारी से इंकार नहीं किया जा सकता है । रेलवे का फ्रेट मूवमेंट अच्छी रफ्तार से बढ़ रहा है , लेकिन यह मत भूलिए कि फ्रेट में उसका हिस्सा भी 80 फीसदी हुआ करता था, जो अब 20 या 25 फीसदी हो रहा है । इकॉनॉमी की दृष्टि से अच्छा बिजनेस दे रहा है, लेकिन मुकाबला कडा है और खुद को बेहतर बनाए बिना हमेशा अच्छे दिन बनाए जाने की उम्मीद की जा सकती है । मेरा एक छोटा सा सवाल है कि इस रेल बजट में मंत्री जी ने महाराष्ट्र को क्या दिया है? लगता है कि लालू जी रेल बजट बनाते समय महाराष्ट्र को भूल गए है । मुंबई के लिए "गो मुंबई" योजना दरअसल महाराष्ट्र के लिए "नो मुंबई"

योजना बनाई गई है । राज्य के छोटे-छोटे करीब चालीस प्रकल्प प्रलंबित हैं, लेकिन इसके लिए कोई ठोस आश्वासन नहीं है । मुंबई के लगभगत सत्तर लाख लोकल यात्रियों को भी लालू जी ने कुछ नहीं किया है । लगता है कि लालू जी ने महाराष्ट्र को निराश किया है, लेकिन उन्होंने एक काम अच्छा किया है, इसलिए हम उनकी सभी गलतियां भूल सकते हैं ।लाइसेंसधारी कुलियों की गैंगमेन के पदों पर सरकार जो नियुक्ति करने जा रही है, यह स्वागत योग्य फैसला है और मैं इसका स्वागत करता हूं ।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. RJ. KURIEN): How much time will you take Mr. Azad?

श्री गांधी आजाद. (उत्तर प्रदेश)**:** धन्यवाद श्री उपसभाध्यज्ञ महोदय। कितना टाइम है सर?

उपसभाध्यक्ष: (**प्रो0 पी0 जे0 कुरियन**): आपकी पार्टी का सिक्सटीन मिनट है ।

श्री गांधी आजाद: सिक्सटीन मिनट तो बोलने दीजिए ।

श्री दिग्विजय सिंह (**झारखंड**):बाकी समय हमें दे दीजिएगा ।

सिक्सटीन मिनट इनकी पार्टी का टाइम है।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): He will speak for sixteen mintues. After that, we can adjourn the House

श्री गांधी आजाद:सबसे पहले तो मैं माननीय मंत्री जी का स्वागत करता हूं।...(**व्यवधान**)....

श्री माननीय सदस्य : हाउस कब तक चलेगा?

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): He will speak for sixteen minutes. Then, we will adjourn the House for the day. Let him complete-his speech.

6.00 P.M.

श्री गांधी आजाद:शुरू करुं ?

उपसभाध्यक्ष :बोलिए ।

श्री गांधी आजाद:सबसे पहले तो मैं माननीय मंत्री जी का स्वागत करता हूं । स्वागत इसलिए कि यात्री किराया बढ़ाए बगैर, माल भांडे में भी कोई बृद्धि नहीं किए बगैर उन्होने जो मुनाफ़ा दर्शाया है , यह एक स्वागत योग्य कदम है। यात्री किराए में बृद्धि न करने की बजाय यात्री गाडियों की लंबाई और डिब्बों की संख्या में बढोत्तरी करके 2004-2005 से 2007-08 के दौरान 3000 आतिरिक्त डिब्बों को जोड़कर 2000 करोड़ की अतिरिकत आय की वृद्धि किया जाना एक अच्छा कदम है । पार्सल विज्ञापन, लैंड लीज आदि से रेलवे आय में अभूतपूव वृद्धि हुई है । चार वर्षो में अन्य कोचिंग और विविध आय 100 करोड़ रूपए से बढ़ कर 4700 करोड़ रूपए होने की सम्भावना है । यह एक अच्छा कदम है ।

माननीय मंत्री जी ने यात्री गाडियों में discharge free green toilet की व्यवस्था करने की जो बात कही है । यह एक अच्छी बात है ।उन्होंने यह बात पीछे भी कही है, लेकिन यह अभी तक पूरा नहीं हुआ है । मैं माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि जो बात कहा रकें, जो घोषणा किया करें, उनको पूरा करने का भी प्रयास किया करें, तब जाकर उन घोषणाओं की पूर्ति पर जनता को लाभ हो सकेगा ।

रेल यात्रियों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता रखने की बात कही गई है । वर्षो से खाली 5700 सिपाहियों और 993 उप-निरीक्षकों की रिक्तियों को मई 2008 तक पूरा कर लिया जाएगा, यह भाषण में कहा गया है । लेकिन क्या मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि ये रिक्तियां कितने वर्षो से खाली पडी है । और आपके कार्यकाल में कितनी नियुक्तियां की गई ? यह आपके भाषण में स्पष्ट नहीं है । 973 नए पद सृजित किए गए हैं, लेकिन यह कब तक भर दिया जाएगा, स्पष्ट नहीं है । इन सुरक्षा बलों की कमी कि वजह से आज रेलवे से सबसे ज्यादा जहर-ख़ुरानी का प्रकोप दिखाई देता है कि जहर-ख़ुरानी के द्वारा हमारे यात्रियों को ठगने का काम किया जाता है । यह सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश और बिहार, जहां के माननीय मंत्री जी हैं, वहां ज्यादा दिखाई देता है । इस पर रोक लगाने का प्रयास किया जाए

लाइसेंसधारी कुली को ग्रैगमैंन ओर चतुर्थ वर्ग में अन्य पदों पर नौकरी देने की बात कही गई है । यह अच्छी बात है, लेकिन भाषण में इसका कोई आकलन नहीं किया गया है । क्या मैं मंत्री जी से जान सकता हूं कि कुल लाइसेंसधारी कुलियों की संख्या कितनी है और आपके रेलवे विभाग में उनको गैंगमैंन और चतुर्थ श्रेणी में भरने के लिए रिक्त संख्या कितनी है । तब जो पता लगाया जा सकता है कि इनको किस अनुपात में और कितने समय में भर दिया जाएगा । अगर यह काम किया जा रहा है तो यह एक सराहनीय कदम है ।

साथ-ही-साथ विद्यार्थियों को, वरिष्ठ महिला नागरिकों को अशोक चक्रधारियों को जो रियायत दी गई है, वह एक स्वागतयोग्य कदम हैं, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के आरक्षण की बात भाषण में कही गई है कि 99 प्रतिशत भर लिया गया है, लेकिन मेरी जानकारी के अनुसार प्रथम श्रेणी, द्वितीय और तृतीय श्रेणी में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के पद रिक्त पड़े हुए हैं । इसलिए मैं मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़े वर्गो की रिक्तियों को भी विशेष अभियान चला कर भरने का काम किया जाए ।

जहां तक कर्मचारियों के कल्याण की बात है, हमारे साथी ने भी बताया, मैं भी स्पष्ट करना चाहता हूं कि कर्मचारियों को मकान तक नहीं मिलता है । मैं आजमगढ़ से आता हूं । आजमगढ़ के 50 प्रतिशत से ज्यादा कर्मचारियों को मकान की व्यवस्था नहीं है, इसलिए वे दूर-दूर से, दूसरे जिलों से आते हैं, जिससे संचालन की देखरेख में उनको असुविधा होती है ।

महोदय, यात्रियों की सेवा के लिए जो गाड़ियां चलाई गई हैं, उनमें 10 गरीब रथ, 53 नई गाडियां हैं , 16गाड़ियों का विस्तार किया गया है ।, 11 गाडियों के फेरों में वृद्धि की गई है यह अच्छी बात है । लेकिने जो 53 नई गाड़ियां चलाई गई है, उसमें स्पष्ट है कि जो नौ नई गाडियां चलाई जाएंगी, उनमें से आठ आमान परिवर्तन के बाद और एक गाड़ी नई लाइन बनने के बाद चलाई जाएगी । फिर यह भी सुनिश्चित नहीं है कि इसी सत्र में वह आमान परिवर्तन हो जाएगा या नहीं अथवा नई लाइन बिछ जाएगी या नहीं । अगर ऐसा सुनिश्चित ही नहीं है तो हमारी समझ से नौ गाड़ियों की उदघोषणा करना एक तरह से धोखा देने का काम हैं ऐसा नहीं करना चाहिए । आगे कोई दूसरे मंत्री आते या आप स्वंय आगे के कार्यकाल में मंत्री आते और यह आमान परिवर्तन और नई लाइन बिछाने का कार्य हो जाता, जब इन नई गाड़ियों की बात की जाती तो शोभा भी देता ।

इसी तरह से 16 गाड़ियों के विस्तार की बात कहीं गई है, उसमें भी कहा गया है कि तीन गाड़ियों का विस्तार आमान परिवर्तन के बाद होगा । इसके कहने का क्या मतलब है ?

महोदय, मैं आजमगढ़ जनपद से आता हूं और आजमगढ़ जनपद अब जिला ही नहीं है, कमिश्नरी हेडक्वार्टर भी है कई बार मैं इस सदन के माध्यम से रेल बजट पर यह डिमांड करता आया हूं कि आज भी, जबकि कई गाड़ियों का विस्तार हो चुका है, वहां पर एक ही प्लेटफॉर्म है इसलिए मैं माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि कम से कम वहां पर दो प्लेटफार्म और बनाए जाएं, ताकि यात्रियों को सुविधा दी जा सकें । साथ ही वहां पर एक प्लेटफार्म से दूसरे प्लेटफार्म पर जाने के लिए कोई ऊपरगामी पुल नहीं है, इसलिए मैं यह निवेदन भी करूंगा कि वहां पर अतिरिक्त प्लेटफॉर्म बनाए जाने के साथ-साथ एक प्लेटफॉर्म से दूसरे प्लेटफार्म पर जाने के लिए पुल बनाने की भी कृपा की जाए ।

महोदय, एक निवेदन मैं और करूंगा, इस चीज की डिमांड कई बार की गई है कि आजमंगढ से मुम्बई जाने के लिए मंत्री जी गाड़ी दें । गोदान एक्सप्रेस के लिए अब सातों दिन कर दिए गए हैं इसके लिए आजमगढ़ की जनता की ओर से मैं मंत्री जी का स्वागत करना चाहता हूं । साथ ही साथ उन्होंने दिल्ली से जो कैफियत एक्सप्रैस चलाने का काम किया, इसके लिए भी मैं वहां की जनता की ओर से उनका स्वागत करना हूं । लेकिन बार-बार अनुरोध करने पर भी उन्होंने उसे कोलकाता तक के लिए नहीं बढ़ाया हैं, जबकि रोज हजारों यात्री कोलकाता जाते हैं । वहां से सौ किलोमीटर आगे बनारस जा करके, दूसरे साधनों से उन्हें गाड़ियों को पकड़ना पडता है । इसलिए मैं माननीय मंत्री जी से पुरजोर निवेदन करता हूं आजमगढ़ से कोलकाता जाने के लिए चाहे वाया छपरा होते हुए या फिर वाया शाहगंज, बनारस होते हुए गाड़ी को कोलकाता पहुंचाने का काम करें । आजमगढ़ की जनता की ओर से मैं यह मांग करता हूं और आशा ही नहीं विश्वास करता हूं कि माननीय मंत्री जी इसको पूरा करने का काम अवश्य करेंगे ।

कैफियत एक्सप्रेस, जो दिल्ली से चलाई जाती है, इसमें इतनी भरमार होती है कि दो-दो महीने की टिकट एडंवास बुक हो जाती है। लोग दो महीने पहले ही उसे बुक कर लेते हैं, इसलिए अब उसमें जगह नहीं रह गई है। मेरा निवेदन है कि उसमें डिब्बों की संख्या की और बढ़ाया जाए। दूसरी बात, मेरे बार-बार अनुरोध करने पर भी आज तक उसमें पेंट्रीकार नहीं लगवाया गया, इसलिए जो प्राइवेट लोग उसमें खाने-पीने का सामान बेचने काक काम करते हैं, एक तो वे घटिया किस्म का खाना देते हैं, ऊपर से उसके ऊंचे से ऊंचे दाम भी लेते हैं। इससे वहां के यात्रियों को बहुत परेशानी होती है मैं निवेदन करूंगा कि इस कैफियत एक्सप्रैस में पेंट्रीकार लगाने का काम भी किया जाए।

महोदय, एक फतेहपुर जिला है, जो इलाहाबाद और कानपुर के बीच में पड़ता है। वहां पर हमारे कई सांसद भी हैं। हमने और वहां के उन सांसदों ने लिख करके भी दिया है। कि इस रूट पर जो दस राजधानी गाडियां चलती हैं, उसमें से एक भी राजधानी गाड़ी का एक या दो मिनट का वहां पर स्टॉप या ठहराव नहीं है। इससे वहां के लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पडता है और उन राजधानी गाडियों का लाभ उनको नहीं मिलता है। इसलिए मेरा निवेदन है कि जो 10 गाडियां चलती है, उनमें से किसी एक गाड़ी का ठहराव फतेहपुर रेलवे स्टेशन पर करने की कृपा करें, यह हमार निवेदन है।

महोदय, इसके साथ-ही-साथ आजमगढ़ से लखनऊ आने के लिए कोई इंटरसिटी गाडी नहीं है जिससे लोगों को काफी परेशानी है। इसलिए मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से मांग करता हूं कि आजमगढ़ से लखनऊ के लिए जो एक लखनऊ राजधानी है और वहां पहुंचने के लिए जिस तरह बनारस से लखनऊ आने के लिए इंटरसिटी है, उसी तरह से आजमगढं से लखनऊ आने के लिए एक इंटरसिटी ट्रेन चलाने की डिमांड करता हूं। आशा ही नहीं, भरोसा करता हूं कि माननीय मंत्री जी उसे पूरा करने का काम करेंगे।

महोदय, सम्भल एक बहुत पुराना स्टेशन है, जो अंग्रेजों के जमानों का बनाया हुआ है। दिल्ली से सम्भल कोई भी पैसेंटर ट्रेन नहीं चलात है। मेरा निवेदन है कि दिल्ली से सम्भल वाया मुरादाबाद होते हुए ट्रेन चलाने की भी योजना रखी जाए ।

मैं पुनः निवेदन करता चाहता हूं कि माननीय मंत्री जी जो कहते हैं, शायद उन घोषणाओं को वह भूलते भी जाते हैं जैसा कि पहले बजट में उन्होंने कहा था, कुल्हड़ के प्रयोग के विषय में। कुछ दिनों तक कुल्हड बड़ी तेजी से चला और हमार प्रजापति समाज के लोग भी, गरीब लोग कुल्हड़ के इस प्रयोग से बहुत खुश हुए वह उस दौरान तो चला था, लेकिन आज ट्रेन में एक भी कुल्हड़ दिखाई नहीं देता है। इसलिए मैं माननीय मंत्री से निवेदन करूंगा कि जो घोषणाएं वह करते हैं, उनकी मॉनिटरिंग भी वह किया करें कि वे घोषणाएं केवल घोषणाएं ही रह जाती है इसलिए अगर इन घोषणाओं को पूरा करने का प्रयास किया जाए .....(**समय की घंटी**) **तो** माननीय मंत्री जी का कार्य स्वागतयोग्य होगा। उन्होंने जो एक कविता कही है "नई कथनी, नई करनी, नई एक सोच लाए हैं, तरक्की की नई पारसमणि हम खोज जाए हैं।" लेकिन घोषणाएं न पूरी होने के कारण मैं उसमें एक लाइन जोड़ना चाहता हूं कि "पुरानी सभी घोषणाओं को छोड आए हैं"। इन्हीं शब्दों के साथ मैं मंत्री जी का पुनः धन्यवाद करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं। धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIAN): The House is adjourned to meet tomorrow at 11. a.m.

The House then adjourned at thirteen minutes past six of the clock till eleven of the clock on Tuesday, the 11th March, 2008.

GMGIPMRND—3134RS—13-08-2009.